RAJBIL26868/2016/1284525

6 वर्ष 3 अंक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

Jaivardhan News

हिन्दी मासिक पत्रिका www.jaivardhannews.com जनवरी 2024

पेज संख्या : 28

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

आए राम

Rocks Forever

NEOTECH QUARTZ SURFACE

a saga of trust & reliability

26 JANUARY REPUBLIC DAY OF INDIA

WORKS AT

UNIT-I : PLOT NO. B.436, ROAD NO. 18A, BHAMASHAH RIICO INDUSTRIAL AREA KALADWAS, UDAIPUR (RAJASTHAN) INDIA

UNIT-II : BEHING POWER HOUSE, BARWA CHOURAHA VILLAGE, BILOTA, DELWARA, RAJSAMAND (RAJASTHAN) INDIA

गणतंत्र दिवस
पर हार्दिक बधाई
हिम्मतसिंह चुंडावत
सरपंच
एवं समस्त वार्डपंचगण
INDIA REPUBLIC DAY
ग्राम पंचायत खटामला, पंचायत समिति व जिला राजसमंद

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके
स्वच्छता में सहयोग दें।
REPUBLIC DAY
रामेश्वरलाल खटीक
उप प्रधान देलवाड़ा
मांगीलाल कटारिया
सरपंच देलवाड़ा
प्रदीप पालीवाल
उप सरपंच देलवाड़ा
उदय सिंह
ग्राम विकास अधिकारी देलवाड़ा
ग्राम पंचायत
देलवाड़ा
जिला राजसमंद

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके
स्वच्छता में सहयोग दें।
Happy Republic Day
लाली बाई
सरपंच ग्रा. पं. नेड़च
भंवर रेबारी
उप सरपंच नेड़च
कालूलाल भील
सामाजिक कार्यकर्ता
अमित यादव
ग्राम विकास अधिकारी नेड़च
ग्राम पंचायत
नेड़च
जिला राजसमंद

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स,
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशंचद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

सम्पादकीय

देश-दुनिया में राम का नाम

22 जनवरी 2024 को अयोध्या में श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के पवित्र मौके पर देश ही नहीं, दुनियाभर के लोगों में उत्सवी माहौल है। प्रभु श्री राम अवध के सिंहासन पर राजा बनकर बिराजेंगे। जयवर्धन द्वारा भी कुछ रामराज्य से जुड़ी कृतियां पेश की जा रही है। पत्रकार, साहित्यकार के साथ हर जन मानस उल्लासित है। क्या राजा, क्या प्रजा, हर नर नारी के मन में उल्लास उमड़ रहा है। उत्सव की सरयू सरिता हिलोरे ले रही है। गांव-गांव, गली गली, नगर, महानगर में 22 जनवरी को प्रभु श्री राम के मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की खुशी इस कदर छाई हुई है, उसे चित्रित करने के लिए शबरी के आंगन में रामजी के आने का जो दृश्य मानस पटल में उभरता है, वही काफी है। श्री राम के जीवन से अनगिनत सीख लेकर अपने निज जीवन को धन्य एवं सार्थक किया जा सकता है, मगर कर्मवाद की प्रेरणा इन पंक्तियों से मिलती है-

राम कह सुग्रीव से, अब लंका केति दूर।
आलस्या अलगी घणी, उद्यमी हाथ हुजूर।।

भक्ति भाव से यह अवसर संकल्प लेने को प्रेरित करता है कि श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा मंदिर में करने के साथ-साथ अपने निज प्राणों में भी प्रतिष्ठा हम करेंगे। हमारा जीवन उन्नत हो, आध्यात्मिकता का भाव बना रहे, यही जयवर्धन के इस अंक का हेतु है और राम की तरफ अग्रसर होने का सेतु है।

।। जय श्री राम ।।

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

अतिथि सम्पादक

नारायणसिंह राव 'निराकार'
साकेत साहित्य संस्थान

राम पत्थर में भी प्राण फूंक देते है

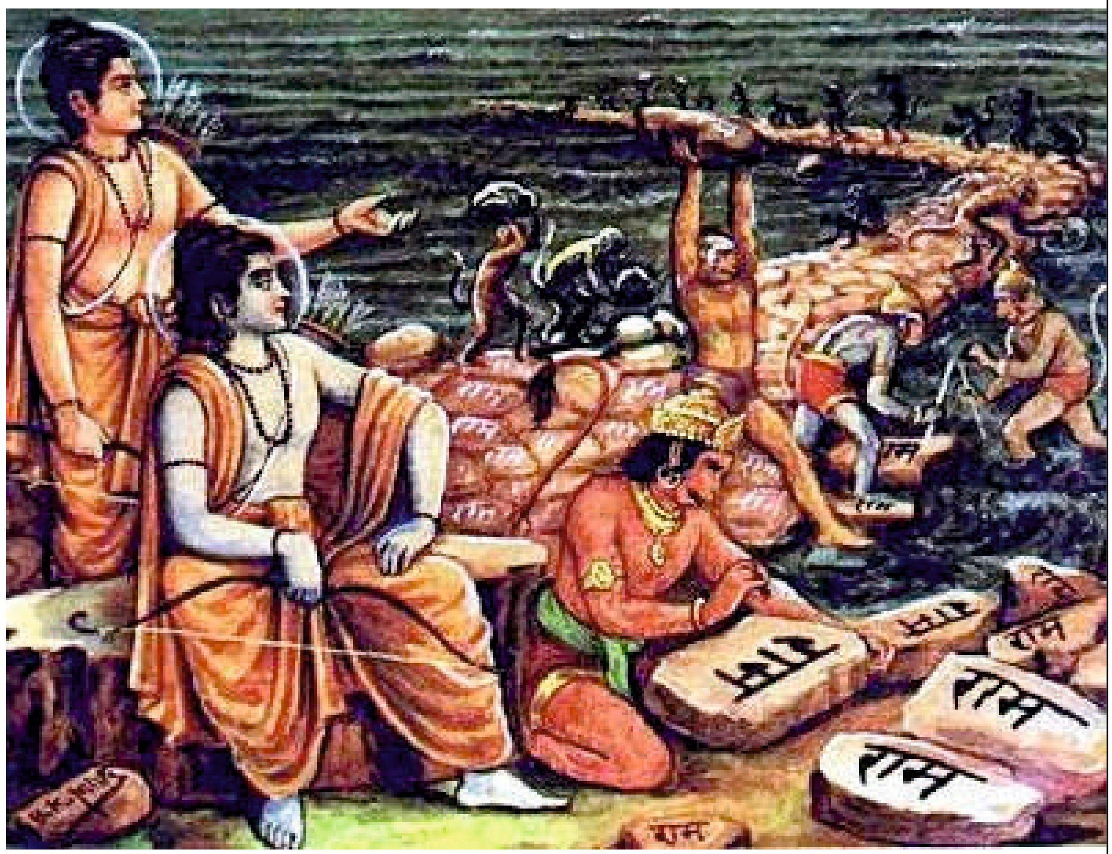

दशरथ पुत्र राम कोई व्यक्ति हो सकता है, मगर मर्यादा पुरुषोत्तम राम उस व्यक्ति का व्यक्तित्व हो जाया करता है और तुलसीकृत रामचरितमानस उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का कृतित्व हो जाया करता है। यही जीवन में राम बनने की प्रक्रिया है, मगर इस प्रक्रिया के लिए त्याग, तप, तपस्या और साधना का बहुत ही कठिन मार्ग है, जिस पर चलना एक आम आदमी के लिए आसान नहीं होता है। राम का प्रभाव जनमानस पर त्रेता युग में जितना था, उतना ही आज भी है। अवतार जन्म नहीं लेते, वह तो मानव ही होते हैं, मगर अपने कर्म, अपने व्यक्तित्व और कृतित्व की वजह से वो मानव से महामानव और उसके बाद ईश्वर के अवतार के रूप में पूजनीय हो जाते हैं।

दशरथ पुत्र राम होना जन्म है, वो इस तरह से है, जिस तरह से एक सामान्य बालक का किसी पिता के घर में जन्म लेना, मगर मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनना उस व्यक्ति की यात्रा है। उस यात्रा के पड़ाव में जो भी घटित होता है। वह प्रत्येक घटना इंसान के चरित्र को निखारती हुई नज़र आती है और उस चरित्र का आभामंडल इतना व्यापक, इतना व्योम, इतना उत्कृष्ट हो जाता है कि सृष्टि का कण-कण अपनी गूंज के साथ राम राम शब्द का ही उच्चारण करता नज़र आता है। तीनों लोकों के देवी देवता संपूर्ण ब्रह्मांड को साक्षी बनाकर जगत के पालनहार मर्यादा पुरुषोत्तम का जयघोष करने लगते है। जय राम, श्री राम, जय जय राम... राम उसी सत्य का नाम है, जो असत्य पर विजय पाकर सत्य को सनातन सत्य बनाने की क्षमता रखता है। वो सनातन सत्य हर युग में असत्य को परास्त कर धर्म की ध्वजा को लहराता है। राम का नाम ही सत्य है और यही मोक्षदायी भी है। इसीलिए तो पार्थिव शरीर को ले जाते हुए भी राम नाम सत्य है... का उच्चारण किया जाता है। राम तुलसी का प्रेम, सबरी का सब्र और कृष्ण भक्ति में डूबी मीरा का वो गान है जो दीवानी हो... गा उठती है- पायो जी मैंने राम रतन धन पायो..., शिला बनी अहिल्या का उद्धार करते हुए राम पत्थर में भी प्राण फूंक देते हैं। जड़ को चेतन बनाने का यह काम राम बड़ी आसानी से कर लेते हैं। पांच तत्व से बना शरीर प्रकृति का ही वो अंश होता है, जो अपने तप, अपनी तपस्या से परमात्मा का अवतार बन सारे जगत को तार देता है और तारणहार बन जाता है। राम नें अपनी लीला में अपने विराट स्वरूप को कभी नहीं दिखाया। ये मर्यादा राम ने पुरुषोत्तम बनते हुए भी दिखाई है। कृष्ण ने अपने अवतार में अपने विराट रूप को दिखा कर पूर्ण अवतार होने का प्रमाण दिया है, मगर राम को मर्यादा ने बांधे रखा और मर्यादा में रहकर किसी लीला को करना, राम के लिए तो आसान था, मगर कृष्ण के लिए यही कार्य कठिन प्रतीत होता नज़र आता है, इसीलिए कृष्ण को छलिया कहा गया।

राम को सोलह कलाओं में वो सब करना पड़ा, जिसे कृष्ण ने

राम से हैं...

सूरज की पहली किरण
का उजाला राम से है।
सकल सृष्टि में अन्न
का निवाला राम से है ॥
मर्यादा पुरुषोत्तम
और सत्य के सारथी है।
भक्ति भाव में रंगा धर्म
का दुशाला राम से है ॥
शबरी के बेर खाता
जाती के भेद मिटाता ।
पत्थर तैरने का
हवाला राम से है॥
नवमी को जन्में
दशानन का वध करते।
समुद्र तट पे रामेश्वर
का शिवाला राम से है॥
भक्त हनुमान सा
मतवाला राम से है।
प्राण चले जाए पर
वचन कभी ना जाए॥
सरयू नदी पर बसा
अवध निराला राम से है।
सनातन संस्कृति का
फैला उजाला राम से है॥
प्रेम के घट से भरा
'दीक्षित' प्याला राम से है।
सूरज की पहली किरण
का उजाला राम से है॥

चौसठ कलाओं का प्रदर्शन करके किया। राम ने उस कुल में जन्म लिया, जिस कुल के राजा कई पत्नियां ब्याह कर लाते थे। राम के पिता दशरथ के ही तीन पत्नियां थी, मगर राम ने एक पत्नी को अपनी अर्धांगिनी बनाकर समाज में नारी को भोग विलास से ऊपर उठाकर जो सम्मान दिया है, वह सम्मान आज भी समाज में साक्ष्य बनकर सनातन धर्म में सात फेरों में सात जन्मों के लिए बनने वाले बंधन में पति -पत्नी के लिए एक मर्यादित उदाहरण है, राम आदर्श है, उस सनातन धर्म संस्कृति और समाज का जिसने वसुधा पर रहने वाले प्रत्येक जीव को वसुधैव कुटुंबकम् के सूत्र में बांधकर जगत में प्रेम को, भाईचारे को, समानता को बिना किसी भेदभाव के अपनाया है। राम सभी जीवों की भाषा को समझने का सामर्थ्य रखते थे, चाहे फिर वो नभचर, थलचर या जलचर ही क्यों ना हो, इसलिए उन्होंने पाप का सर्वनाश करने के लिए अपनी सेना में सभी को स्थान दिया।

समाज में ऊंच नीच का भेद मिटाकर सबको सहयोगी बना कर सबका साथ, सबका विकास करना ही समाज में रामराज्य की स्थापना करना है। राम का मंदिर अयोध्या में जो बन रहा है, वो दुनिया में रामराज्य की स्थापना करने का शिलान्यास है। भय और आतंक से ग्रसित दुनिया रामराज्य की कल्पना को साकार करती नज़र आएगी। विश्व में भारत भूमि की महानता एक दिन भारत को फिर सें विश्व गुरू बनाएगी। राम का आदर्श, राम की मर्यादा, राम की शिक्षा, राम का वचन, राम की निष्ठा, राम का कर्म फिर से सारी दुनिया में स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत हो रहा है, आज सारी दुनिया राममयी हो रही है।

राम का जन्म नवमीं को हुआ, इसीलिए हम रामनवमी के पर्व को हर वर्ष बड़े हर्ष से मनाते हैं, नवमी में जो नौ का अंक है, उससे राम के जन्म को आसानी से समझ सकते हैं, जो अपने नौ द्वार व पांच इंद्रियों को अपने वश में रख सके और मन रूपी घोड़े को अपने मर्यादा रूपी रथ में जोत कर उसकी लगाम अपने हाथ में रख सके, वही दुनिया में राम बन सकता है। दशानन रूपी राक्षस रावण का वध करने के लिए, अपनी इंद्रियों को वश में करके अपनी शक्ति का जो संचय कर सकता है, वही राम शक्तिपुंज बनकर सनातन सत्य की रक्षा कर सकता है। राक्षसी प्रवृत्ति के लोग हर युग में आएंगे, उसका दमन करने के लिए हर योद्धा को अपनी शक्ति का इसी तरह से केंद्रीकरण करते हुए, हर युग में लड़ना होगा। राम - रावण युद्ध अच्छाई और बुराई के बीच चलने वाले संघर्ष का नाम है, कहते हैं सत्य परेशान तो हो सकता है, मगर पराजित नहीं हो सकता। कलयुग में मुगलों द्वारा विध्वंस किए हुए राम मंदिर का पुर्ननिर्माण इसका जीवंत उदाहरण है, पांच सौ साल के संघर्ष में कई पीढ़ियो ने पीढ़ी दर पीढ़ी राम लला के मंदिर के पुर्ननिर्माण हो, उसका सपना देखकर अपने प्राणों तक की आहुति दी है। साधु संत, महन्त भक्त और सनातन धर्म के अनुयायियों ने इस लड़ाई को जारी रखा, कोर्ट कचहरी तक राम जन्म भूमि का विवाद कई वर्षो तक चलता रहा। विवादित ढांचे का अदालती फैसला, जब सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा राम मंदिर के पक्ष में आया, तब भव्य मंदिर निर्माण का रास्ता खुला और मंदिर बनने की प्रक्रिया शुरू हुई और 22 जनवरी 2024 को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह बड़े हर्ष और उल्लास के साथ होने जा रहा है। देश ही नहीं पूरी दुनिया में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा को एक उत्सव की तरह मनाने की तैयारी चल रही है, ऐसा लग रहा है कि मानो रामलला पांच सौ वर्षों का वनवास काटने के बाद फिर से अयोध्या मेंअपने राजमहल में आ रहे हैं और उसी उत्सव को अयोध्या के नगरवासियों की तरह पूरी दुनिया मनाने की तैयारी में लगी हुई है।

देश ही नहीं विदेश के मंदिरों में भी धर्म की ध्वजा लहराएगी व दीप मालाओं की इस नई रोशनी में नया सूरज, नया उजाला, नया सवेरा, नई उम्मीद लेकर आएगा। घर घर में उस दिन दीपोत्सव का त्यौहार इसी सोच के साथ मनाया जाएगा कि ये सनातन संस्कृति के नए युग का प्रारंभ है, जिससे युवा पीढ़ी सुसंस्कृत और मर्यादित आचरण करने वाली होगी। अयोध्या में राम का यह मंदिर विश्वभर में आस्था, विश्वास और सांस्कृतिक विरासत का नया आयाम स्थापित करेगा।

सूर्यप्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच, राजसमंद
मो. 94146-21730

कहानी सनातन संस्कृति की

गत शताब्दी का नवम् दशक मेरे जैसे उम्र के तीसरे दशक के युवाओं के जुनून और कुछ नया देखने, सुनने और अनुभव करने की घटनाओं में दिलचस्पी रखने का वर्ष था। अखबार अटे पड़े होते थे, अयोध्या में रामलला मन्दिर के रोमांचक समाचारों से। देश कभी निर्माण तो कभी भग्न पर निर्माण के आह्वान के स्वर आलाप रहा था। यह संघर्ष मेरे लिए इन सबके बीच भारतीय संस्कृति के सनातन तत्वों पर चर्चा का समय हुआ करता था।

तब के संघर्ष और संभावित समाधान के उस दौर में मुझे मेरी मां द्वारा सुनाई पंचतंत्र की एक बोध कथा याद आती थी। वह कहानी मेरे जेहन में गहरे कहीं समा गई थी और शायद इसीलिए उस कथ्य को मैंने अपनी मौलिक कविता के शिल्प में पिरो दिया था।

उस कहानी में एक विशाल नन्दन वन हुआ करता था। विशाल आदिम संस्कृति और सभ्यता की यात्रा का साक्षी एक वट वृक्ष होता था। एक बूढ़ा तोता जो निर्लिप्त, निर्द्वंद्व और निर्विकार भाव और समावेशी समदृष्टि से मानों भारतीय शाश्वत, चिरस्थायी और आदि व अंत से निरपेक्ष सनातन संस्कार और संस्कृति का कोई दैवी प्रतिनिधि होता था। वृक्ष की फुनगियों तक निवास करती पंछियों की भोली प्रजा के लिए वह सनातन जीवनशैली और अनुभवों को साझा करने व साथ कहता और प्रजा व राजा के मध्य चिरंतन धर्म और सांस्कृतिक संस्कारों का बीज वपन करता रहता। अल सुबह जब पंछी आसमान में उड़ते, तो उन्हें विश्वास होता पीछे कोई है, जो अलग अलग पारिवारिक परंपराओं से आकर वृक्ष की पनाह लिए विविध रूपों में पंछियों की रक्षा करने वाला है-'यंत्र विश्वं भवति एक नीडम्।'

विचारों की श्रृंखला टूटी तो लगा यह तो मेरे भारत राष्ट्र की चिरंतन संस्कृति और वैदिक परंपरा के उषा काल की सी मानों कोई कहानी है। मेरी भावना ने पंचतंत्र की कथा का मानो, एक अध्याय पूरा कर लिया और वह भाव कविता बन जैसे प्रवाहित होने लगा-

कल रात मां सपने में आयी थी
मैं चुप था, अवाक् भी
थपथपाया, दुलराया
एक कहानी सुनायी थी
आबाद जंगल के बीच
बूढ़े बरगद की छांह
किलकारियां गूंजती
खेलता था गांव।
अपने दुःख अपने ही सुख थे
बाहर का कोई नहीं
सब आत्मोन्मुख थे
जानते थे
इस छांह की प्रकृति
दिन चढ़ने के साथ
खुद से खुद बढ़ जाती
उसकी आकृति
नेतृत्व की गरिमा
कोटर से मुस्कुराती थी
उम्र की ललाट रेखा
पंछियों को पाठ पढ़ाती थी
जो भी था, अपनी जमीन
अपना सपना था
किसी की दरकार नहीं
न किसी की अपने लिए
राह तकना था।

ओह! यह तो हमारे देश की सनातन संस्कृति और जीवन शैली की कहानी बनती जा रही है। बूढ़े तोते के नेतृत्व में सर्व धर्म समभावी सामाजिक जीवन दौड़ रहा था। अब वन्य जीवन का मध्य काल तपने लगा था। वैदेशिक पंछियों और मनुष्यों ने यहां की शान्त तपोभूमि पर मानो आक्रमण कर दिया था। भारतीय इतिहास में महाभारत और रामायण काल में बाहरी शक्तियों का यह सांस्कृतिक और भौगोलिक आक्रमण अपने ओज के साथ शुरू हो गया था। अलबत्ता वहां श्री राम और श्रीकृष्ण थे प्रतिकार और धर्म संस्थापनार्थाय। सोचिए, इस कथा में कौन था?

एक दिन दोपहर का समय। पंछी दाना पानी की खोज में बाहर गये थे। कोटर में बूढ़ा तोता और पेड़ पर अबोले पंछी। देखा-एक छोटी सी लता बरगद के पास उग आयी थी। बूढ़ा तोता चिन्तित हो उठा। वृक्ष की शांत जिन्दगी में कोई तूफान आने वाला है। त्राहिमाम! तोता चिल्ला उठा। मेरी कविता आगे बढ़ चली-

मगर कहो
किसी की शान्ति किसी को
कहां भाती है
कठोर नियति समय की रेख
जमीन पे लिख ही जाती है
कोटर से झांकते
बूढ़े तोते ने कहा
देखते हो
यह कोई नयी बेल
यहां उग आती है

पंछी हंस पड़े
भला इस बेल से डर !
तुम्हारी बुद्धि सठियायी है
वे कह पड़े
कुछ नहीं होने का
हम यहां के किंग हैं
इस जंगल के बस हम
इकलौते सिंह हैं

यह अति विश्वास ! प्रजा की इसी निश्चिंतता ने शान्ति से संघर्ष की राह अनजाने ही चुन ली। संस्कृति, रीति रिवाज, भाषा, जीवन शैली, स्थापत्य, वास्तु कला और सनातन धर्म के केन्द्रों पर बाह्य आक्रमणों के जाल फैंके जाने लगे।

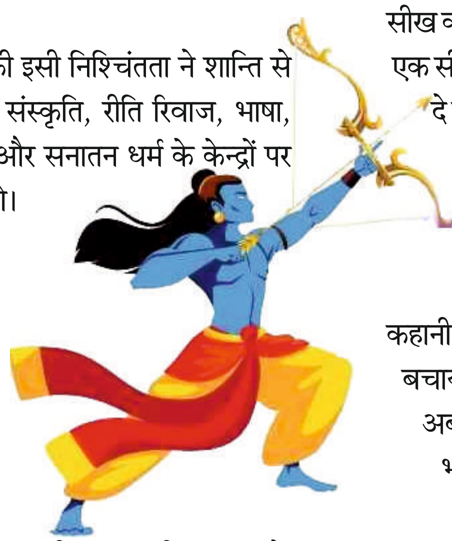

लता फलती रही
बूढ़ी आंखों की नींद
उड़ती रही
बेफिक्र पंछियों की बेपरवाही
बढ़ती रही
लता फुनगियों तक
चढ़ती रही

संस्कृतियों के उत्थान और पतन की यह कहानी रामलला के अयोध्या मन्दिर की कहानी तो नहीं? मैं सोचता था और मां की हिदायतें याद करता था-

मां ने पूछा,और सुनोगे
वादा करो, इसे गुनोगे
यह कहानी आज की है
कुछ अध कटे पंख की
कुछ दूर देस से उड़ आए
परवाज़ की है।

फिर वही हुआ जो होना था। शिकारी आया, बढ़ चुकी लता बेल पर चढ़ जाल डाला, पंछी जाल में फड़फड़ाने लगे और अब अपने 'भाग्य विधाता' को गुहार लगाने लगा।

ये पल थे अपनी गलतियों के एहसास के, सांस्कृतिक पुरुश्चरण के संकल्पकर्ताओं के संस्कृति रक्षण के।

ऐसा ही था वह मंजर
स्वयंभुव मुकद्दर का सिकन्दर
हाथ में जाल
दिल में आकांक्षाओं के समुंदर
शिकारी था वह
लता की राह
फुनगियों तक धावा किया
जाल डाला
सुरक्षा का दावा किया

बूढ़ी आंख रोती थी
पंख फड़फड़ाते थे
नींद से जाग बेफिक्र भूधर
अब हाहाकार मचाते थे।

विभव, पराभव और फिर विभव- यह सम्पूर्ण गल्प अब देश में भव्य दीपावली और समारोहों के अवसर में बदल गया है, लेकिन मेरी मां ने कविता में एक सीख हम सब को दी थी। हमें उस सीख को याद रखना होगा-

एक सीख जो मां हमें
दे पायी थी
ये बात और थी
सो गये थे हम
समय से पहले
आंख पथरायी थी
कहानी में बूढ़े तोते ने
बचाया था
अबोले, आत्म हंत
भोले पंछियों को
जाल से मुक्त कराया था
तब क्या करोगे
जो कभी चील बाजों से
घिर चिल्लाओगे
घर से बेघर कर दिए जाकर
सड़कों पर खड़े हो
धुआंधार नारे लगाओगे।

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
शिक्षाविद् व वरिष्ठ साहित्यकार
श्री द्वारकाधीश मंदिर मार्ग, राजसमंद
मो. 9460252308

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

RKCL का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

मेरे राम

पांच सौ वर्षों के इंतजार के बाद अपनी ही जन्मभूमि पर विराजने के लिए श्री राम का इंतजार लगभग खत्म हो चुका है, राम का जीवन इंसानों को भी बहुत कुछ सीखाता है। भगवान राम का जीवन वास्तव में इंसानों को कठिन वक्त में जीवन को सशक्त बनाने की ही एक प्रतिमूर्ति लेकर अवतरित हुआ है।

राम का जब राजतिलक होने ही वाला था कि ऐन वक्त पर माता केकई की आज्ञा से चौदह वर्ष के वनवास के लिए श्री राम निकल पड़ते हैं। इसी बीच माता सीता का रावण द्वारा हरण उस दु:ख को और भी बढ़ा कर रख देता हैं, इसी बीच भगवान श्री राम को हनुमानजी मिलते हैं और उनकी सहायता से लंका पहुंचकर रावण का वध करते हैं और वापस सीताजी के साथ अयोध्या आते हैं। लंका से आने के बाद उनका राजतिलक करके श्री राम को अयोध्या का राजा बना दिया जाता है और तभी राम राज्य की स्थापना पूरे भारतवर्ष में होती है। राजाराम कुछ वर्षों के बाद बैकुंठ धाम सिधार जाते हैं और उनका अयोध्या में ही जो निवास था, उसको मंदिर के रूप में उनकी मूर्ति को भक्तों के लिए दर्शनार्थ रख दिया जाता है, जहां पर भगवान राम की पूजा अर्चना और भक्तों के दर्शन के लिए रामलाल सदैव भारत के लोगों के आराध्य के रूप में आशीर्वाद देते रहते हैं।

लेकिन पांच सौ वर्षों पूर्व आक्रांता बाबर ने उनके मंदिर को ध्वस्त करके मंदिर को मस्जिद में तब्दील कर देता है, तभी से सनातन धर्म के लोग आराध्य श्री राम लला को उनके निज मंदिर में वापस स्थापित करने के लिए धर्म युद्ध लड़ते रहते हैं। इस धर्म युद्ध में कई ऋषि, मुनि और नर, नारियों ने अपने प्राणों को न्यौछावर करने में भी कोई कसर बाकी नहीं रखी, लेकिन इस धर्म युद्ध का सफर बहुत लंबा चलता रहा। मुगलों के शासन के बाद अंग्रेजों का शासन आया, फिर भारत अंग्रेजों से भी मुक्त हुआ, लेकिन आजाद भारत के बाद भी राजनीति के बीच अयोध्या का राम मंदिर का विवाद सुलझाया न जा सका, लेकिन श्री राम का यह वनवास चौदह वर्षों से अधिक था, लेकिन राम जी ने अपने जीवन काल में जितना धीरज रखा, उतना ही धैर्य इस में भी रखा और अंत में जीत श्री राम की ही हुई। उनके अनुयायियों और धर्म की हुई।

राम हमारे आराध्य है, इनसे हमें यही सीखने को मिलता है कि हमें अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए, उसके लिए चाहे कितना ही कठोर वनवास ही क्यों ना भुगतना पड़े। धर्म की रक्षा के लिए अगर शस्त्र भी उठाना पड़े तो उसमें कोई संकोच नहीं रखना चाहिए, हनुमान जैसे मित्रों को सदा अपने पास रखना चाहिए, छोटे भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न जैसे होना चाहिए, जो सदैव अपने बड़े भाई के साथ हमेशा उनके साथ खड़े रहे, उनकी आज्ञा का पालन करते रहे, माता सीता जैसी सोच हर पत्नी की होनी चाहिए, जो अपने पति के लिए सुख दु:ख में हमेशा साथ रहे और हर पुरुष को राम जैसा होना चाहिए, जो अपनी पत्नी के लिए पूरी राक्षस जाति का संहार करने में किसी भी हद तक गुजर सके। अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हुए वनवास को भी हंसते-हंसते निकल पड़े, दिल से चाहने वालों के लिए शबरी के झूठे बैर भी बहुत ही आनंद से खा सके, राजाराम जैसा बनना मुश्किल है, लेकिन नामुमकिन भी नहीं।

आज हमारे आराध्य देव श्री राम का अयोध्या में एक बहुत ही बड़ा मंदिर में बन चुका है, उसमें प्रभु श्री राम 22 जनवरी 2024 को विराजने वाले हैं। यह दिन हर एक सनातनी के लिए ऐतिहासिक दिन होगा। यकीनन युगों युगों तक इस दिन की महिमा का गुणगान पूरे विश्व में होता रहेगा और प्रतीक होगा, अधर्म पर धर्म की विजय का।

।। **जय श्री राम** ।।

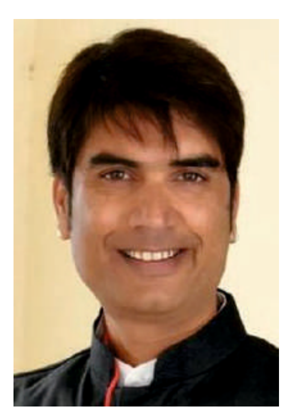

राहुल दीक्षित 'RD'
काव्य गोष्ठी मंची, राजसमंद
मो. 94610-16726

समय के लिए नुस्खें

सुबह का समय था। सेहत जैसी थी, वैसी ही थी। जैसी होनी चाहिए थी, वैसी नहीं थी। अब ठीक होने से रही, लेकिन जिसे झेलना है, वह चाहती है, हमारी सेहत पहले से अच्छी हो। उसने ये कभी नहीं कहा, ये बदलाव स्वयं में भी हो। उस पर तो परिवार का बोझ है और उसमें सबसे बड़ा बोझ हम ही हैं। यह बोझ एक बार लद जाए, तो गधे की तरह ढोना पड़ता है। अगर बोझ सुन्दर, सलीके का हो तो मन को सुकून रहता है। बोझ है, लेकिन दर्शनीय है। पत्नी के लिए आप बोझ हैं, लेकिन आपके लिए पत्नी। कह दिया तो उल्टे बांस बरेली के हो जाएंगे। बांस को सीढ़ी बनाए रखने के लिए पत्नी का अनुसरण करते रहना चाहिए। उसकी गलत बातों का पार्टी की गलत नीतियों की तरह जहां से गुलगुले मिले, वहां की आलोचना नहीं करनी चाहिए।

जब लड्डू की तलब लगी हो, तो हलवाई को गालियां नहीं देना चाहिए। शिक्षा ग्रहण करनी हो तो गुरू को भी सम्मान दे देना चाहिए। मोहल्ले में रौब जमाना है, तो नगर पार्षद को डलिया भी भेजना चाहिए। चालान से बचना हो तो सभी को थानेदार समझना चाहिए। अगर शांति चाहिए तो अशांति पैदा करना भी जरूरी है। अशांति ऐसी हो, जिससे मौन का निर्माण हो। डंडे वाली अशांति आपको पूर्ण शांति कर सकती है।

बहरहाल... दिल्ली की ठंड में घूमने जाने का मन बनना यानी सत्ता पद को लात मारना। जब पत्नी से गर्मा-गर्मी हो जाए, तो दिल्ली की ठंड में भी गर्मी का अहसास हो जाता है। अहसास होना लेखन की प्रथम सीढ़ी है। जो लिखते हैं, उन्हें अहसास जल्दी हो जाता है। पत्नी के मायके जाने का अहसास, पड़ोसन के मायके जाने के विपरीत होता है। आप दुख और खुशी का अहसास दोनों स्थितियों में नहीं कर सकते। कई बार कृत्रिम दुःख और कृत्रिम सुख का दिखावा करना पड़ता है। जो सफल है उसका जीवन सफल है, नहीं तो मरने के बाद ही स्वर्ग मिलता है।

खैर... जैसे-तैसे घूमने निकल पड़े। या यूं कह लो धक्के मार के निकाल दिए गए। कभी-कभी घूमना भी चाहिए/ घुमाना भी चाहिए। घुमाने की एक उम्र होती है और घूमने की भी। घुमाने की उम्र में आस पास कुछ दिखाई नहीं देता। घूमने की उम्र में आसपास का ही दिखाई देता है। भगवान ने स्मृति लोप का वरदान नहीं दिया होता तो मेमोरी को डिलीट करना सबसे बड़ी समस्या हो जाती। तुलना में पूरी जिन्दगी निकल जाती। ये अच्छी है या खैर घूमते-घूमते कई नए विचार आते और पुराने विचार जमा होते चले जाते हैं।

घूमने के स्थान आप तय करते हैं। कहां घूमना चाहिए, कहां नहीं? यूपी में तो बिल्कुल नहीं। घूमने के लिए सबसे उन्मुक्त जगह मुंबई और गोवा है। वह इसलिए कि हर घूमने वाला जानता है कि दूसरे के दिमाग में दही जमा है, वह उसे पिघलाने की कोशिश में जुटा है। दुनिया जाए भाड़ में। वहां पर सभी की दुनिया अलग-अलग होती है। उनकी दुनिया से आप कुछ भी निकाल लें, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता, यहीं कारण है कई फिल्मों के शीर्षक/कहानियां/ प्लॉट यहीं से मिल जाते हैं। कुछ कभी कभार एकाद गांव से भी खोज लाते हैं। अगर इस उम्र में गोवा और मुंबई जाकर घूमने का प्रस्ताव रखा, तो दो-चार वीटो धड़ाम से आ गिरेंगे और आप औंधे मुंह किसी पार्क पाथ पर आस पास नज़रें चुराकर देखते और घूमते नज़र आएंगे।

मित्रों से बड़ा कोई दुश्मन नहीं होता। मेरे भी मित्र हैं। कुछ ऐसे मित्र हैं जो कहते हैं कि भैया शुक्रवार को एक विचार भेज देना। कुछ मित्र किताब भेज देते हैं तो कभी हम ही अपने दुश्मन बन जाते हैं और किताब खरीद लाते हैं। समस्या यह नहीं है, समस्या है घर की समस्याओं से बचना और पढ़ने के लिए समय निकालना। बच्चों को अपने से फुरसत नहीं, बची पत्नी। उसे आप नकार नहीं सकते, हिम्मत है तो नकारकर दिखाएं? जब हमारे बॉस के बॉस दुम हिलाते हैं तो हमारी औकात ही क्या है?

जब पढ़ना है तो कुछ जुगत करनी ही पड़ती है। हमने भी पत्नी से ना.. ना करते नासमझी दिखाते हुए झूठ-मूठ का गुस्सा-गुस्सी कर ली। सब समझौते शाम ढलते ही समाप्त हो जाते हैं। पूरा ध्यान रखा, यह समझौता एक सप्ताह बाद ही करना है, क्योंकि जो किताबें आई हैं, उन्हें पढ़ना भी तो है।

इस योजना पर अमल अपनी जोखिम पर करें। मानहानि-जनहानि-सरफुटाई और हाथ पैर को हुए नुकसान के लिए झम्मन जिम्मेदार नहीं होगा।

सुनील जैन 'राही'
व्यंग्यकार, नई दिल्ली
मो. 9810960285

अध्याय अवध

आज अवध से दूर हुआ फिर काल कलूषित
अंधियारा
राम लला के जयकारों से गूंज उठा जब ये
नभ सारा
उदय हुआ आदित्य नवल फिर रोशन करने
आर्य धरा
नई ऋचाओं ने तोड़ा है अम्बर पसरा तम
का पहरा
दमक रहे देवों के चेहरे गंधर्व गगन में
नाच रहे
आज अयोध्या के आंगन आचार्य सुमंगल
बांच रहे
आल्हादित हो मचल रही निर्मल सरयू की
धारा
आज अवध से दूर हुआ फिर काल कलूषित
अंधियारा
ईंट ईंट पर राम लिखा और पत्थर पत्थर
बोल रहा
राम लला का जयकारा श्रवणों में अमृत
घोल रहा
धरती अम्बर अगन पवन और खुश चंदा
और तारे
उल्लासित हो मंगल गाते वन उपवन झूमें
खग सारे
दिवाली सा जगमग करता ये साकेत नगर
प्यारा
आज अवध से दूर हुआ फिर काल कलूषित
अंधियारा
जुड़ा हुआ विश्वास राम की मर्यादा पूरण
मान का
आरम्भ हुआ फिर मंदिर से नये भारत के
निर्माण का
सकल संस्कृति पूर्ण सनातनी आर्य धरा सा
देश नहीं
संकल्प और संस्कारों वाला दूसरा कोई
परिवेश नहीं
पुरूषार्थ के प्रयासों से ही सफल हुआ चरितार्थ
हमारा
राम लला के जयकारों से गूंज उठा जब ये नभ
सारा ।।

प्रमोद सनाढ्य
वरिष्ठ साहित्यकार, नाथद्वारा

रामराज

मंगल भवन अमंगल हारी।
22 जनवरी 2024 को अयोध्या,
आ रहे हैं राम लल्ला,
सब मिल राजतिलक की करो तैयारी।
मंगल भवन.......................।
मोदीजी बने प्रतीकात्मक यजमान,
मंदिर का देखा सपना वो थे
आडवाणी और अटल बिहारी।
मंगल भवन.....................।
जब ढयाहा था कलंकित ढांचा
उसमें कितने कारसेवकों ने दिया बलिदान
मुल्ला-यम ने गोली मारी।
मंगल भवन.....................।
वर्षों पश्चात ये शुभ दिन आया,
प्रधानमंत्री मोदी ने कर दिखाया,
भारतवर्ष के खुश हुए सब नर नारी।
मंगल भवन....................।
विपक्षी सब सोच रहे क्या करें,
समझ न पावे इधर कुआ-उधर खाई,
एक अकेला सब पर भारी।
मंगल भवन.....................।
रामभक्तों को करो नमन जिन्होंने,
जन्म भूमि के लिए किए प्राण न्यौछावर,
मैं तो उन पर जाऊं बलिहारी।
मंगल भवन....................।
हिंदू राष्ट्र अब बन के रहेगा,
कहे प्रीतम सुनलो भैया,
रामराज की करो तैयारी।
मंगल भवन अमंगल हारी।।

जय श्री राम

बख्तावरसिंह चुंडावत 'प्रीतम'
साहित्यकार आमेट, राजसमंद
मो. 9413287301

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

बदहाल साल व्यंग्य पड़ताल

चंद्रमा पर चंद्रयान-3 के लैंडिंग की तरह साल दो हज़ार तेईस की ऐसी तैसी करते हुए हम लोग भी सफलता पूर्वक दो हजार चौबीस में प्रवेश कर रहे हैं। पिछले साल की तर्ज पर इस वर्ष भी कैमरामैन धृतराष्ट्र, संवाददाता गांधारी के साथ व्यंग्य बतंगड़ाचार्य एक सौ पौने आठ विनोद विक्की के साथ वर्ष 2023 का व्यंग्य पड़ताल वाले विक्की मीडिया के खास कार्यक्रम पोस्टमार्टम 2023 में आपका स्वागत है।

इस वर्ष अखबारों एवं न्यूज़ चैनलों की दाल-रोटी और रेटिंग का दारोमदार विज्ञापन की बजाय सीमा और सचिन की दिनचर्या और शामी-नूरजहां के व्यक्तिगत संबंध पर टिका रहा। लैला-मजनूं, मुमताज-शाहजहां, दशरथ-फगुनिया से भी हिट इंटरनेशनल लव स्टोरी बनाने के लिए पाकिस्तानी पब्जी गेम की चैंपियन सीमा हैदर और भारतीय पब्जी खिलाड़ी सचिन के पीछे भारतीय जांच एजेंसी से ज्यादा अखबार और न्यूज चैनल वाले तंबू गाड़ कर लगे रहे तो शामी और नूरजहां के अलगाव में चटखारे पेश करने का पुनीत कार्य किया। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई में जितने साक्ष्य नहीं मिलें होंगे। अक्टूबर में यूपी, एमपी, राजस्थान और बिहार तथा दिसंबर में ओडिशा और झारखंड में आईटी की रेड में गरीब धन कुबेरों के घर से इतनी राशि मिली कि गिनती के दौरान मशीन के कलपुर्जे भी हांफने लगे।

जुबां केसरी क्लब में अक्षय,अजय और शाहरुख की तिकड़ी के अलावा इस वर्ष बालीवुड का कोई अन्य बंदा नहीं जुड़ पाया, लेकिन महानायक के थुक-पीक सामग्री की जीभ लिप्सा से प्रेरित होकर बुस्ट ब्रांड कपिल देव और क्रिस गेल कमला पसंद को पसंद करके आह्लादित नजर आए। मंदिर और दरगाहों के बाहर भिक्षावृत्ति कर रहे हजारों लोगों की व्यथा अथवा पुनर्स्थापना तक ना पहुंच पाने वाला राष्ट्र इस वर्ष चांद पर पहुंच गया और सूरज के लिए उड़ान भर दिया।

इस साल ओडिशा के बालासोर एवं आंध्रप्रदेश के विजयनगर में विकास आमने- सामने टकरा गई, जबकि बिहार के बक्सर में सरपट दौड़ती विकास बेपटरी हो गई। मणिपुर में मैटी-कुकी मानवीय जज्बातों से, नौ राज्यों में चुनाव के दौरान राजनेता, लोक लुभावन घोषणाओं से और राष्ट्रीय खिलाड़ी दर्शकों की भावनाओं से खेलते हुए देखे गए। बिना फेविकोल के कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत जोड़ने निकले, नेताजी ने 136 दिनों की यात्रा के पश्चात जनवरी के अंत में भारत को जोड़ने का प्रयास किया, लेकिन कुल 9 राज्यों के चुनाव में कर्नाटक एवं तैलंगाना को ही पार्टी से जोड़ पाए। हार की स्थिति में पार्टी द्वारा ईवीएम के चरित्र पर उंगली उठाई गई, जबकि जीते हुए राज्यों में ईवीएम को चरित्रवान मान बिहारी बाबू की तरह खामोश दिखे। छह वर्ष के अल्पायु अवधि वाले दो हजार रुपए के नोट ने इस वर्ष अंतिम सांस ली।

चुटकियों में शत्रुओं को वश में करने वाले अखिल भारतीय स्तर पर थोक भाव में उपलब्ध गोल्ड मेडलिस्ट बाबाओं द्वारा शत्रु टीम को वश में नहीं कर पाने की नाकामी के कारण या खिलाड़ियों का रील्स मीम्स बनाने की व्यस्तता के कारण अथवा टोटका-पनौती की वजह से भारत की बजाए शत्रु टीम आस्ट्रेलिया ने विश्व कप पर कब्जा जमा लिया। यह विवादास्पद उच्च स्तरीय मंथन का विषय बना रहा।

सूत्रों से पता चला है कि चुटकियों में चांद पर पहुंचने वाले देश में एक पखवाड़े की मशक्कत के बाद सुरंग में फंसे 41 मजदूरों के जिंदा निकाले जाने पर उनके परिवार वालों से ज्यादा खुशी अक्षय कुमार को इस उम्मीद से हुई होगी कि मिशन मंगल और मिशन रानीगंज के बाद मिशन टनल के लिए मौका मिल जाए। हालांकि विक्की मीडिया इस बात की पुष्टि नहीं करता है। इस वर्ष आदि पुरूष ने बाहुबली की बली ले ली, तो यौन शिक्षा पथ प्रदर्शक ओएमजी खिलाड़ी कुमार को सेल्फी लेने की स्थिति में भी नहीं छोड़ा। जवानी में जोरू के लिए गदर मचाने वाले सनी पाजी ने बुढ़ापे में बेटे को लेकर पाकिस्तान में खूब गदर मचाया, जबकि पठान जवान बनकर बुढ़े बादशाह सुर्खियों में बने रहे। कुत्ते और टाइगर को पछाड़ने वाला एनिमल सोशल एनिमल द्वारा खूब पसंद किया गया।

57 वर्षीय मोस्ट बैचलर इस साल भी ना तो किसी का भाई बन पाएं और ना किसी की जान बन पाएं। दिसंबर में शादियों का सीजन जब परवान पर था तो एक युवक अति उत्साह में शादियों में रंगीन रोशनी करने वाले केन के साथ ससुराल की बजाए संसद में घुस कर पीली रोशनी क्या किए उसके बाद तो संसद में भ्रष्ट सरकारी कर्मचारियों की तरह सांसदों का निलंबन शुरु हो गया। इस साल आईपीएल के लिए मिचेल स्टार्क करोड़ों में बिककर खुशियां तो कौड़ी में बिकने और ना बिक सकने वाले खिलाड़ी मातमी माहौल में दिखे।

हमारे संवाददाता धृतराष्ट्र का मानना है कि पर्चा निकालने वाले बाबा अपनी नेमतों के कारण, दिल्ली परालीजन्य दूषित परतों के कारण, अल्पवस्त्र धारी उर्फी जावेद अपनी हरकतों के कारण, बिहारी लोक गायक ढोड़ी केंद्रित गीतों के कारण, महंगाई और बेरोजगारी से लोहालोट भारत बढ़ी हुई आबादी के साथ चीन को पछाड़ने के कारण, नया संसद भवन सैंगोल लगाने के कारण, फाइनल फोबिया पीड़ित टीम वर्ल्डकप गंवाने के कारण एवं प्याज, टमाटर अपनी कीमतों के कारण सुर्खियों में बना रहा।

रुस-युक्रेन, इजरायल-हमास के मधुर संबंधों से प्रभावित वैश्विक तापमान ने रिकॉर्ड गर्म साल होने में सफलता हासिल कर ली। राजस्थान में कांग्रेस और वर्ल्ड कप में खिलाड़ियों ने भले ही वापसी ना कर सके, किंतु जाते-जाते कोरोना नए वेरिएंट के साथ शानदार वापसी कर ली।

बहरहाल पुराने कैलेंडर को खिसकाकर दो हज़ार चौबीस घुसपैठ कर चुका है। यह साल महंगाई, शिक्षित बेरोजगार, भ्रष्टाचार से जुझ रहे भारतीय जनता के लिए कैसा रहेगा, यह तो बेजान दारूवाला या बेंगा बाबा को भी नहीं पता, किंतु विक्की मीडिया की रिपोर्ट में इस बात का खुलासा बिना पेटसफा का सेवन किए किया जा रहा है कि अशिक्षित, अंगूठाछाप, गिरहकट से शार्प शुटर के लिए उम्मीदों से भरा हुआ है, क्योंकि इस वर्ष लोकसभा चुनाव के तहत 543 सीटों पर बंपर बहाली के साथ उम्मीदवार बनकर लोकतंत्र में राजसी सुख प्राप्त करने का सुनहरा अवसर लेकर वर्ष 2024 का आगमन हो रहा है।

विनोद कुमार विक्की
खगड़िया, बिहार

विश्वकप में बाबाजी का निराशाजनक प्रदर्शन

चुटकियों में शत्रुओं को वश में करने का दंभ भरने वाले बाबा का देश होते हुए भी भारत से विश्व कप ट्रॉफी को शत्रु टीम हड़प कर ले गई, यह बेहद ही शर्मनाक और जन सामान्य को आहत करने वाली घटना है। खिलाड़ियों से ज्यादा उम्मीदें हमें बाबाओं के चमत्कार से थी। क्योंकि हमारे देश में गोल्ड मेडलिस्ट बाबा अथवा मौलानाओं की ऐसी असंख्य संस्थाएं हैं, जहां जिंदगी से परेशान अस्त-व्यस्त, त्रस्त मानव की सभी तरह की पीड़ा, बाधा और व्यथा का उपचार एवं निराकरण डंके की चोट पर किया जाता है। फिर भी विश्व कप का फिसल जाना बाबाओं के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार को प्रदर्शित करता है।

महज नींबू-मिर्ची, मानवीय खोपड़ी और हड्डियों की पूंजी वाले सिंगल मैन ऑपरेटेड इस सर्वबाधा हरण संस्थान में परिवार, पत्नी, पड़ोसन, प्यार, पेट्रोल, प्याज से लेकर प्राण निकालने सहित प्रजातंत्र में व्याप्त है, से हलन्त तक सभी प्रकार की परेशानियों का शर्तियां समाधान किया जाता है।

इन संस्थानों का प्रचार-प्रसार रनिंग ट्रेन अथवा उन दीवारों के माध्यम से किया जाता है, जिन दीवारों पर बड़े-बड़े शब्दों में लिखा होता है 'यहां पेशाब करना मना है।' इस अलौकिक संस्थान का ए-फोर साइज वाला विज्ञापन स्टिकर ट्रेन के जनरल डब्बा के अंदर मिल जाएगा। अखिल भारतीय स्तर पर व्याप्त इस संस्थान का मुख्यालय या शाखा कार्यालय का पता हमेशा लापता होता है।

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
RKCL का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

सकल बाधा हरने वाले स्टिकर विज्ञापन में इनके वास्तविक नाम की बजाय किराए या उधार पर लिया गया जनकल्याणकारी नाम छपा होता है। उक्त सकल विघ्नहर्ता चमत्कारी बाबा/ पीर के नाम के आगे गोल्ड मेडलिस्ट होने का उल्लेख उसी प्रकार किया जाता है, जिस प्रकार ब्यूटी पॉर्लर के बोर्ड पर 'केवल महिलाओं के लिए' उल्लेखित होता है। गौरतलब है कि बाबाजी को गोल्ड मेडल शिक्षा, मैराथन, तीरंदाजी या जुमलेबाजी के क्षेत्र में मिला है, इसका कहीं कोई जिक्र नहीं रहता। वैसे इनके मेडलिस्ट होने पर जास्ती मगज नहीं खपाने का, क्योंकि जब इनके तंत्र-मंत्र से खोया प्यार, मनचाहा प्यार विवादित जायदाद, क्षय हो चुकी जवानी, ऐश्वर्य सबकुछ हासिल हो सकता है, तो नामुराद स्वर्ण पदक कौनसी बड़ी चीज है।

इनके विज्ञापन पोस्टर पर स्वयं या इनके रामबाण क्लिनिक, दफ्तर, संस्थान की तस्वीर ना होकर शिरडी के साईं की तस्वीर चिपकी होती है, ठीक वैसे ही जिस तरह भारत सरकार के सरकारी पत्र पर राष्ट्रीय चिह्न अंकित रहता है।

संभवतः आधार कार्ड से लिंक नहीं होने की वजह से रनिंग ट्रेन के इस कल्पतरू विज्ञापन में इनके घर / कार्यालय का स्थायी डाक पता अथवा स्थान का उल्लेख नहीं होने के कारण बाबा का ठिकाना सदैव परिवर्तनशील रहता है। स्टिकर में अंकित दो-तीन मोबाइल नम्बर ही इनके ऑनलाइन चिकित्सा पद्धति या जनकल्याणकारी समस्या समाधान का एकमात्र जरिया होता है। बाबा परम उदार और कल्याणकारी प्रवृत्ति के होते हैं, क्योंकि दूसरे का प्यार और परिवार बचाने के लिए ही इन्होंने मां की कसम खाकर अपनी दुकान हमारा मतलब संस्थान खोला है। दूसरे की मां-बहन का कल्याण करने वाले ऐसे बाबाओं के मां की जय-जयकार मुक्त कंठ से होनी चाहिए। ये बाबा विशुद्ध सेकुलर होते हैं, क्योंकि इनके विज्ञापन गजट पर क्रॉस, 786, ॐ, स्वास्तिक आदि सहित सभी धर्मों का प्रतीक चिह्न सामूहिक रूप से मुद्रित रहता है।

यह स्वयंसिद्ध चमत्कारी बाबा कबीर के स्वघोषित वंशज होते हैं। क्योंकि 'कल करे सो आज कर, आज करे से अब...' वाली नीति के कट्टर समर्थक होते हैं। जर-जोरू-जमीन के जिन दीवानी और फौजदारी मामलो का निष्पादन तारीख पर तारीख हॉलमार्क वाली संस्थान के जज वर्षों में भी नहीं कर सकते, उन मामलों का निपटान ये घंटा करते... मेरा मतलब चंद घंटों में करने का माद्दा रखते हैं।

ऑलराउंडर बाबा साक्षात शिव के कलयुगी अवतार होते हैं। इनके विज्ञापन में मानवीय संहार के तहत फोन पर ही आधा घंटा के अंदर सौतन को तड़पाने का, शत्रुओं को मिटाने का पुनीत कार्य का उल्लेख रहता हैं। इस संस्थान के स्वामी जमीन,जायदाद, प्रेम, पैसा के विवादों को सुलझाने एवं दुश्मनों को चंद मिनटों में मिटाने का शर्तिया दावा ऐसे करते हैं, मानो स्वच्छता का ब्रांड अम्बेसेडर बनकर बेगॉन स्प्रे से कॉकरोच का सफाया करने निकले हो। गोल्ड मेडलिस्ट बाबा सबसे बड़े दंडाधिकारी है और इनका कद भारतीय कानून से भी ऊंचा है। इनके विज्ञापन में ये काला जादू के जानलेवा प्रयोग से मरने-मारने का खुल्लम खुल्ला उद्घोष करते हैं।

धरती की कोई ताकत इनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती, इसलिए बाबा सबकुछ खुलेआम दावा ठोक कर करते हैं। मजाल क्या है कि भारतीय संविधान का कोई कानून या एक्ट इन बाबाओं की एक जंतर तक उखाड़ सके। रनिंग ट्रेन में प्रचारित बाबाओं की रन करती असंख्य रनिंग रहस्यमयी संस्थानों के बावजूद विश्वकप ट्रॉफी पर शत्रुओं का कब्ज़ा किया जाना निराशा जनक है। विज्ञापन और रील्स बनाने की व्यस्तता के कारण खिलाड़ियों द्वारा फाइनल में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया जाना तो समझ में आता है, किन्तु शत्रु शमन शक्तिशाली बाबा लोग आस्ट्रेलिया को वश में करने की बजाय उस समय किसकी सौतन का बंटाधार करने गए हुए थे, यह उच्च स्तरीय जांच का विषय है।

विनोद कुमार 'विक्की'
महेशखूंट बाजार, खगड़िया, बिहार
मो. 7765954969

भारतीय परम्पराओं का शिलान्यास

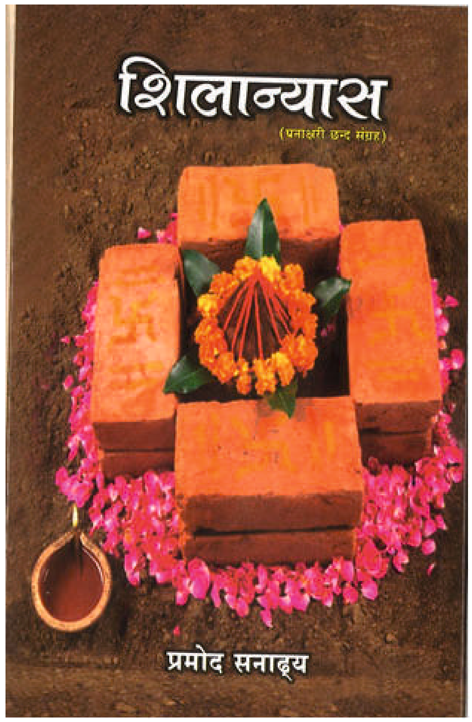

ईश्वर में आस्था रखने वाले सभी आस्तिकों के लिए, प्राकृतिक छटा एवं पर्यावरण संजोकर रखने वालों के लिए, राष्ट्रवाद और देश भक्ति को सर्वोपरी मानने वालों के लिए, भारतीय नारी के गौरव को अक्षुण रखने वालों के लिए, महापुरूषों के जीवन से सीख लेने वालों के लिए और अपने परायों से प्रेम बनाए रखने वालों के लिए शिलान्यास पुस्तक मनहरण घनाक्षरी छन्द संग्रह की यह पुस्तक कवि प्रमोद सनाढ्य ने सरल, सहज और मनभावन मनोयोग के साथ लिखी है। अपनी स्वानुभूति में ही कवि प्रमोद सनाढ्य ने स्पष्ट कर दिया कि शिलान्यास किसी भौतिक इमारत का नाम न होकर युग के निर्माण, पौराणिक सनातनी संस्कृति को संजोकर रखते हुए आधुनिक पद्धति के परिवेष एवं मां भारती की मर्यादा, एकता, अखण्डता, समरसता, सद्भाव की प्रवृति के सूचक के रूप में किया गया है।

शिलान्यास पुस्तक के घनाक्षारी छन्दों में कृष्ण भक्ति के बाल लीलाओं का वर्णन देश भक्ति, शहीदों की गाथा, प्रकृति व नारी श्रृंगार, मिलन एवं विरह राजनैतिक परिवेश और हास्य का भी समावेष किया गया है। पुस्तक में छोटे मोटे 78 घनाक्षरी छन्दों को अपनी काव्यकला से कवि ने बड़ी लगन और मेहनत के साथ पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। गणेश वन्दना से प्रारम्भ रचना सरस्वती

प्रमोद सनाढ्य

वन्दना, शिव वन्दना, हनुमानजी वन्दना, मां भारती वन्दना, सत्यमेव जयते की ज्योत जगाती है। नवरात्री के नवरूप की स्तुति मां शैलजा, मां ब्रम्हचारिणी, चन्द्रघंटा, मां कुष्माण्डा, मां स्कन्धा, मां कात्यायिनी, मां चामुण्डा, मां महीगौरी व मां सिद्धीदात्री की वन्दना भक्ति रस में सराबोर कर देती है।

सम्पूर्ण रामायण को 9 घनाक्षरी छंदों में बड़े सुन्दर ढ़ंग से कवि प्रमोद सनाढ्य ने संवारा है। पूरी रामायण को शुरू से अंत तक 9 छंदों में समेट कर रामायण का सम्पूर्ण आनन्द पाठकों तक पहुंचाने का कवि ने सफल प्रयास किया है। शिलान्यास, शिव की बारात, नन्द के कुचेरे, राधा संग श्याम अच्छी रचनाएं है।

इसी तरह पुरी पुस्तक के छन्द पढ़कर एक आलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। कवि का हृदय कृष्ण भक्ति में मंगन लगता है, पुस्तक में कई रचनाएं कृष्ण को इंगित कर लिखी गई है। चुगली, श्याम श्रृंगार, तिरथ पायल, पनघट आदि ऐसी ही रचनाएं हैं, सम्पूर्ण पुस्तक को पढ़कर ही कवि के मनोभाव को समझा जा सकता है। सचमुच यह पुस्तक सहदय पाठकों के लिए और आस्तिक पाठकों के लिए एक अमूल्य निधि है। कवि प्रमोद सनाढ्य को इस अच्छी पुस्तक के लिए ढेरो बधाईयां।

अफ़ज़ल खां अफज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, राजसमंद
मो. 98284-75288

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

तुम आती हो

तुम आती हो
बैठ मेरे सामने
सपनों के फूल खिलाती हो।
पदचाप निस्वर,
बजती छम-छम
सांसों में उठती स्पंदन क्रम
तुम आती हो।।
मन मरूस्थल में
हरियाली के बीज उगाती
हो।
अपलक देखूं तुमको मैं ऐसे
शब्दों के बाण न छुटे जैसे
तुम आती हो।।
बोझिल उर में
शाश्वत प्यार लुटाती हो।
स्वर्णिम मुस्कान में गलता
तन
काले मेघ की छाया में
ढलता श्रम
तुम आती हो।।
आनंद ज्वार उठाती हो।
जीवन में आये जाये सुख-
दुख
रहना तुम मेरे नयनों के
सम्मुख
तुम आती हो।।

जीवन पथ पर
प्रेम सुधा बरसाती हो।
बैठ मेरे सामने
सपनों के फूल खिलाती हो।
तुम आती हो।।

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद
लेखक, पटना (बिहार)

व्यंग्य

मैं इक राजा मेरी अपनी कहानी

शिखर पर खड़े होने का मज़ा लूटने के बाद इक अनजाना डर हमेशा बेचैन किए रखता है, जहां से चढ़कर ऊंचाई पर पहुंचे, वापस लुढ़क कर नीचे गिरने का। ऐसा अनुभव हुआ, जब राजधानी से आमंत्रण प्राप्त हुआ।

कथाकार शायद उनकी कही बात को भूल ही गया था कि अचानक शासक शंहशाह का संदेश मिला, शीघ्र चले आओ मेरी जीवनी लिखने का उचित समय आ गया है। कथाकार को हैरानी हुई कि ऐसे समय जब सरकार महत्वपूर्ण निर्णय लेकर कितने राज्यों की बागडोर पुराने महारथियों से लेकर नए नए चेहरे ढूंढ उनके सर ताज पहना रहे हैं। भविष्य की योजना को ध्यान में रखते हुए अपनी कथा की रूपरेखा बताने की फुर्सत भी कैसे हो सकती है। कक्ष में बैठते ही किसी आकाशवाणी की तरह उनकी जानी पहचानी आवाज़ सुनाई दी। आपने आने में तनिक भी विलंब नहीं किया। ये सराहनीय बात है फिर भी मेरी जीवनी कोई साधारण विषय नहीं है, आपको इक विश्वास अपने भीतर जगाना ज़रूरी है कि मैं कोई लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित शासक ही नहीं, बल्कि जैसा मुझे शिखर तक पहुंचाने वाले करोड़ों प्रशंसक भक्त की तरह समझते और मानते हैं। मैं इस आधुनिक काल का पहला और आखिरी अवतार पुरुष खुद को भगवान घोषित करता हूं। ये स्मरण रखना अति आवश्यक है कि भगवान की जीवनी नहीं, कथा लिखी जाती है और भगवान चाहे जो भी करता रहे, उसकी सभी बातों को उचित ठहराने को तर्क गड़ने पड़ते हैं। जैसे एक मिसाल है श्री कृष्ण ने जामवंत से मणी पाने को युद्ध किया और उसको मार कर मणी ही नहीं हासिल की, बल्कि उसकी पुत्री को भी अपनी पत्नी बना लिया था। श्री कृष्ण जी को ऐसा अपने पर लगाए अपनी पत्नी के पिता के आरोप से मुक्त होने के कारण किया था, लेकिन उसको अपराध नहीं साबित किया। कथाकार ने इसको महान कार्य सिद्ध किया कि ऐसा कर जामवंत को उनके प्रभु राम के दर्शन करवाए थे। राम और कृष्ण अलग अलग होकर भी एक थे। क्योंकि दोनों ने खुद को विष्णु भगवान का अवतार घोषित किया था।

कथाकार ने कहा आपकी बात समझ भी ली और गांठ भी बांध ली है और अभी तक की आपकी सभी गतिविधियां मुझे मालूम है, लेकिन थोड़ी सी बातें हैं, जिनको लेकर मन में संशय बाकी है, बस उनकी चर्चा करना अनिवार्य है। कक्ष में अंधेरा छा गया और सामने बड़े आकार के पर्दे पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की तरह साक्षात सरकार दिखाई दिए। कथाकार से सवाल पहले ही मंगवा लिए गए थे और जवाब भी पूरी तरह तैयार कर प्रकट हुए थे। इसलिए फिर से भाषण शुरू कर दिया। आपकी दुविधा रानी को लेकर अनावश्यक है, मेरे लिए रानी एक काल्पनिक किरदार है, जब जहां आवश्यकता होती है, ज़िक्र करते हैं। अन्यथा उसका कोई महत्व राजनीति में नहीं होता है, मेरी रानी या रानियां बदलती रहती हैं, शतरंज के मोहरे की बात अलग होती है, लेकिन शकुनी के पासे की तरह जो उनके मृत पिता की रीढ़ की हड्डी से बने हुए थे और जैसा शकुनी का आदेश होता, उसी करवट पड़ते थे। आपने गीता में सुना होगा, श्री कृष्ण अर्जुन को समझाते हैं और अपने मुंह को खोलकर दिखलाते हैं कि ये सभी योद्धा मर कर मेरे मुख का ग्रास बने हुए हैं। तुमको इनका वध करना है और विजयी होकर शासन और शोहरत पानी

है। हमारे दल में भी कोई मेरे बराबर कद का नहीं है और न ही कभी होने दिया जा सकता है। ऐसे तमाम नेताओं को पंख काट कर पिंजरे में बंद कर दिया है, जिनको ज़रा भी गलतफ़हमी थी कि जनता उनको चाहती है और सत्ता पर बिठा सकती है। सभी को साफ़ साफ़ संदेश और संकेत मिला है कि मुझे छोड़ अन्य किसी का कुछ भी महत्व नहीं है। जीत अर्थात मेरी विजयपताका फहरा रही है।

मेरी कथा में पत्नी संतान जैसा कुछ भी नहीं, क्योंकि ये सब सांसारिक बंधन मोह में जकड़ते हैं, जबकि मेरा रिश्ता सत्ता सुंदरी से है, जो हमेशा यौवन का वरदान पाए हुए है। संविधान से जिसको मैंने अपनी शैया के पाए से बांध लिया है। मेरी कथा की शुरुआत है, जिसका अंत कभी नहीं होगा। क्योंकि मैं कभी मर नहीं सकता। मेरे बाद भी मैं खुद ही शासन करूंगा, ऐसा असंभव नामुमकिन कार्य जिसने मुमकिन किया, वो मैं सिर्फ और सिर्फ मैं ही हूं। मुझे पिछले या अगले की बात नहीं करनी है, केवल मेरी कथा सबसे अधिक फ़लदाई है। तभी उनको आकर पत्नी ने नींद से जगा दिया और कथाकार का खूबसूरत सपना अधूरा रह गया। पत्नी ने टीवी का चैनल बदलकर समाचार की जगह टीवी शो कर दिया था। बिग बॉस कौन है, कौन बनेगा करोड़पति में उलझे लोग क्या जाने राजनीति का ऊंट किस करवट बैठेगा।

डॉ. लोक सेतिया
वरिष्ठ साहित्यकार
मॉडल टाउन, फतेहाबाद, हरियाणा
मो. 9416792330

जयवर्द्धन के स्तम्भकार विनोद कुमार विक्की को गोपाल राम गहमरी व्यंग्यसाधक सम्मान 2023

अखंड गहमरी की संस्था द्वारा बिहार के विनोद कुमार विक्की का चयन व्यंग्य विधा में समग्र योगदान के लिए किया गया। **जयवर्धन के नियमित व्यंग्य स्तंभकार** और राष्ट्रीय स्तर के व्यंग्यकारों में शुमार हो चुके बिहार के युवा व्यंग्यकार विनोद कुमार विक्की सहित दर्जनों साहित्यकारों एवं कलाकारों को एशिया के सबसे बड़े गांव गहमर में गहमर वेलफेयर सोसाइटी एवं साहित्य सरोज पत्रिका के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित त्रिदिवसीय ९वां गोपाल राम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव के सम्मान सत्र में गोपाल राम गहमरी सम्मान 2023, साहित्य सरोज सम्मान तथा सारस्वत सम्मान से सम्मानित किया गया।

संस्था द्वारा चयनित साहित्य, कला-संस्कृति, चिकित्सा, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान हेतु बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान आदि राज्यों के दर्जनों व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। मौके पर मथुरा के प्रियंका खंडेलवाल, तारिका खंडेलवाल, उज्जैन के डॉ लक्ष्मी राजवर्मा इशिका वर्मा, लखनऊ की गीतिका श्रीवास्तव, सितारा श्रीवास्तव रीता श्रीवास्तव, कलाकार संतोष शर्मा, शान हाथरस, ज्योति किरण रतन, फिल्म निर्माता निर्देशक सुनील दत्त मिश्रा, कुमकुम काव्य कृति मुंगेर, नाटककार क्रिस्टल किसलय लखनऊ, डॉ. बृजेश गुप्ता मदोवा, संस्कार भारती की अध्यक्ष डॉ. कनक वर्मा लखनऊ, नारायणी साहित्य अकादमी की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. पुष्पा सिंह विशेन, वाह भाई वाह फेम कवि गणेश शर्मा विद्यार्थी आगरा, बांसुरी वादक राजेश भटनागर जयपुर, दयाशंकर शर्मा प्रयागराज, अपूर्वा अवस्थी लखनऊ, ओमजी मिश्र लखनऊ, डॉ. पंकज सिंह पटना, ज्योति कुशवाहा गाजीपुर, आरबी शर्मा पागल हरदोई, मीना सिंह मध्यप्रदेश, डॉ. आलोक प्रेमी भागलपुर, कवि कृष्णानंद पटना आदि को सम्मानित किया गया। तीन दिवसीय कार्यक्रम के तहत 22-24 दिसंबर तक अखंड गहमरी के संयोजन में कवि सम्मेलन, नाग नथैया, लोक नृत्य, परिचर्चा, मन की बात, गंगा स्नान सह कामाख्या देवी दर्शन, फिटनेस, पुस्तक मेला, सम्मान समारोह आदि सत्रों का आयोजन किया गया।

गौरतलब कि इस वर्ष राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश, यूपी तथा बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन पटना में बिहार विधानसभा अध्यक्ष के हाथों सम्मानित हो चुके विनोद को उनकी पुस्तक सब चकाचक है के लिए जयपुर साहित्य संगीति द्वारा विशिष्ट श्रेष्ठ कृति सम्मान के लिए चयनित हुए हैं।

Interpretations on the Journey of Lord Ram..

Lord Rama, the most revered figure in Hinduism, is considered the seventh avatar (incarnation) of Lord Vishnu, born in the city of Ayodhya. Rama is hailed as an exemplary figure of virtue, righteousness, and ideal kingship. His life and teachings are chronicled in the ancient Indian epic, the Ramayana, which narrates the story of his exile to the forest, the abduction of his wife Sita by the king Ravana. Rama is often depicted as the embodiment of dharma (righteous duty) and is revered for his unwavering commitment to moral principles. His life exemplifies qualities such as compassion, loyalty, and selfless service. Rama's triumph over the demon king Ravana and his eventual return to Ayodhya after fourteen years in exile is celebrated as Diwali, the festival of lights.

Lord Rama's life serves as a timeless source of inspiration, moral guidance, and spiritual wisdom for millions of people. His story transcends religious and cultural boundaries, and the principles he embodies continue to resonate in various philosophical traditions and practices. Let's read the different interpretations of great Indian saints, philosophers & leaders-Sant Eknath, a revered Marathi saint and poet, contributed to the understanding of Lord Rama's life through his work, the Bhavartha Ramayana. Eknath Ji's interpretation focused on the devotional and spiritual aspects of Rama's journey. He highlighted Rama's role as a divine incarnation and a source of inspiration for seekers on the spiritual path. His commentary aimed to instil a deeper understanding of the Ramayana's spiritual teachings, encouraging devotees to cultivate a profound connection with the divine.

Swami Vivekananda admired Lord Rama as a paragon of ideal leadership and moral conduct. He spoke highly of Rama's qualities as an exemplary king, emphasizing selfless service, duty, and adherence to righteousness. Vivekananda saw

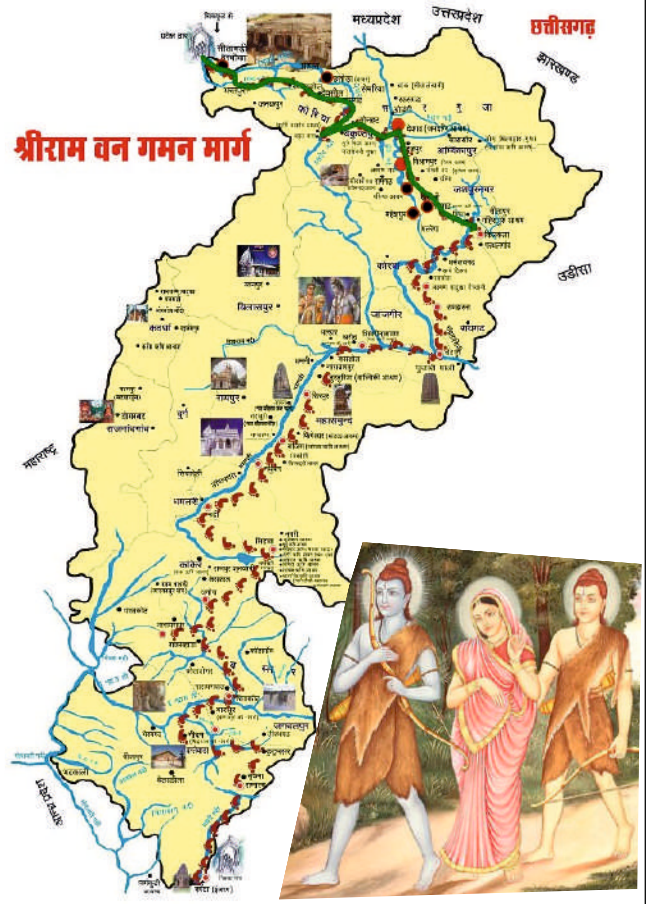

Rama's life as a profound spiritual lesson, encouraging individuals to live in accordance with higher principles and values. The Ramayana, according to him is a guide for navigating life's challenges with unwavering commitment to dharma (righteousness). He mentioned Rama as a symbol of strength, virtue, and spiritual wisdom. Vinoba Bhave, an advocate of nonviolence and spiritual principles, viewed Lord Rama's life through a moral and ethical lens. Bhave appreciated Rama as an embodiment of dharma (righteous duty) and considered his actions as exemplary instances of selfless service and adherence to moral values. For him, Lord Rama represented an eternal guide whose life offered timeless lessons on the path of righteousness and ethical conduct.

Pandit Shriram Sharma Acharya, a prominent spiritual leader and founder of the All World Gayatri Pariwar, provided insightful perspectives on Lord Rama's life. Acharya ji believed that Rama's life exemplified the highest moral and ethical standards, highlighting the significance of righteousness, duty, and devotion. The principles derived from Lord Rama's life, according to Acharya ji, could guide individuals on a transformative journey towards personal and spiritual growth.

Osho, the spiritual teacher and philosopher, viewed Rama's journey as a metaphor for the inner spiritual quest. He emphasized psychological and existential aspects, portraying Rama's battles against external forces as symbolic of the inner struggle against one's own ego and desires. Osho encouraged followers to explore the deeper meanings within the Ramayana and extract universal truths applicable to personal growth and self-realization. His interpretations, while not aligning with traditional views, aimed to guide individuals on a transformative inner journey rather than a literal understanding of Lord Rama's life.

Morari Bapu, a renowned Ram Katha exponent emphasizes the importance of dharma (righteousness), love, and compassion in Rama's character. Morari Bapu's storytelling often includes vivid narratives from the Ramayana, bringing out the ethical and practical dimensions of Rama's choices and actions. His teachings aim to inspire individuals to lead a virtuous life and cultivate devotion through the profound examples found in Rama's journey, fostering a deeper connection with spirituality and moral principles.

Growing up in a traditional and spiritually inclined family, my comprehension of Lord Rama transcended the conventional notion of hero worship. I learned that merely reading and reciting the stories of Rama is not an end in itself; rather, it serves as a transformative practice that unfolds into a deeper understanding over time. The repetitive acts of reading and recitation were not rituals alone; they were avenues through which the stories of Rama became a dynamic force, shaping my ethical and spiritual worldview. Lord Rama's life is not merely a narrative; it unfolds as a timeless source of inspiration, a guide for leading a life of purpose, virtue, and compassion.

Manisha Lashkari
Principal
Pragati Sec. School,
Railmagra, Rajsamand

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

राखो मनखाचार, योई वरत तेवार

मनख जात रो काई केवणो। भोमका ठाडी पड़ी तो केई जीव जनावर आया। नाना नाना ऊं लगाइन मोटा मोटा तक। पाणी में माछळियां आई तो धरती पे डाकी डाकी जीव आया। हाथी तो वणारे आगे कठेईस नी लागे। अस्या जीवां ने डाइनासोर नाम दीदो। अणा जीवां बी लाखों वरसां तक आपणो जमारो हदारियो पछे वे बी अळोप वेई गिया।

अबे फोटू में देखो वणाने के सनीमा में। एक सनीमो आयो हो जुरासिक पारक। वणीरो हीरो केवे जो वोई हो डायनासोर। कतराई जीव आया न परा गिया। हंगला केड़े आयो यो नामिक भरियो मनख। अणी तो आवताईन कळाकारी करणी सरू कीदी। पेली रा जनावर मूंडा मूंड मारता हा पण यो धोका ऊं मोरा पाछे मारवा ढूको। ईस्वर बी अणी री खोपड़ी में नामिक वत्तो दिमाग काई देई दीदो, यो तो कंडेई गणती में नी गणे। दूजा जीवा ऊं दवेस राखे जतरे तो ठीक है, पण अंडे तो मनख रो जायो बी नी खटीरो बळे।

आज री टेम में पेली ऊं मनख मनख रे मलवा रा सांसा, वणी ऊपरे यो मारकूट रो खेल। मनख वना मनख नी रेई सके तो मनख ईस मनख ने रांदी रो क्यूं। या वात हमज में नी आई री है। मनखां री भीड़ है पण हेरो तो आपणो कोईस नी। या दनिया असी काई वेई गी। देवरा वाले मनखां ने उतमधड़ा करवा हारू वणाया काई ? वणी तो वणाया के सबी हेळ मेळ ऊं रेवो। कणी रे दक आवे तो वणीने झेलो देवो। नामिक मनखा चारो राखो। पण यो काई हाळाबोळ वेई गियो म्हारा ईस्वर। पाणी पैंताल में मनख, भोमका पे मनख, वाइरा में मनख, ठेठ आकास पे मनख। दूजा गरहां पेबी मनख। कदी चांद बावजी पे पलोट काटी रियो है तो कदी मंगळ पे ठकाणो हेरी रियो है। यो कठे जाइन ढबेला कणीनेई गतागम कोइनी। अणीरो एक ईस धरम है- रिपयो। हर काम में दूजा री गाबड़ी मरोड़णी न रिपया कड़ावणा। अणी यो नवो मनखाचारो वणाई लीदो। और तो और भगवान ऊं कळा करवा में बी पाछे नी है यो करम खोड़लो। मन्दर रा देवता ने बी हूंक देवे के म्हारो यो काम हल्ले लागी जाई तो अतरा रिपया रो परसाद अरोगाऊंला। परसाद बी योईस खावे। भगवान तो है वासना रा भूखा। परेम ऊं भेंट चढ़ावो तो नामिक में राजी दूजूं कळाकारी में तो वे बी हंगळा ने पाछे मेले।

हंगळी वातां रो सार यो के मनख रो जायो मनखपणा ने भी भूले, जतरेईस हाऊ। मदर इंडिया सनीमा रो एक गाणो हो- नी मैं भगवान हूं, नी मैं सैतान हूं, दुनिया जो चावे हमजे, मूं तो इंसासन हूं। मन में योईस भाव उपजणो चावे। आज मलक पे इन्सानां री घणी कमी वेई गी है। बारणाऊं तो कठूं लावां। चालो आपणा मन में ई हेरां, बैठो वेला कणीन कणी खूणा में। हेरियां तो लादेलाइस माइलो इन्सान।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
वरिष्ठ साहित्यकार एवं
आचार्य सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग,
आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर

Rajkesari Rock
Pvt. Ltd.
Happy Republic Day
Manufacturer of Engineering quartz Stone
INDIA REPUBLIC DAY
Address
Village Bilota, Delwara,
Distt. Rajsamand (Rajasthan)

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर
ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
26 JANUARY
HAPPY REPUBLIC DAY
अपील खुले में कचरा न फेंके, स्वच्छता में सहयोग करें
श्रीमती अणछीदेवी
सरपंच
ग्राम पंचायत राछेटी, पंचायत समिति आमेट

आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके, स्वच्छता में सहयोग करें
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
Happy Republic Day
26th January
हीरालाल गुर्जर
सरपंच
ग्राम पंचायत पारड़ी, देवगढ़, जिला राजसमंद

कर्मठ और नेक दिल इन्सान थे अब्दुल खां पठान

मेरे मित्र और छोटे भाई श्री अफजल खां अफजल के पिता स्व. श्री अब्दुल खां पठान मेरे पिता स्व. राधाकिशनजी के परम मित्रों में से एक थे। यही कारण है कि बचपन से ही मेरा उनसे जाना पहचाना संबंध था। अफजल खां अफजल ने जब दो-तीन साल पहले **जयवर्द्धन में "मेरा गांव मेरे लोग" कॉलम लिखना प्रारम्भ किया,** तो कांकरोली गांव के लगभग 74 दिवंगत महापुरूषों के बारे में उनकी योग्यता और उनके उत्कृष्ठ कार्यों की जानकारी आज की नई पीढ़ी को हुई। यहां के बाशिन्दों को यह जानने का मौका मिला कि हमारे पुरखों ने किस तरह अपना जीवन इस कांकरोली में गुजारा और अच्छे इंसान होने का जज्बा आने वाली पीढ़ियों को दिया।

मैंने अनेक बार भाई अफजल से कहा तुम गांव के इतने दिवंगत लोगों के बारे में लिख चुके हो, तो अपने पिता स्व. अब्दुल खां पठान जी के बारे में भी तो कुछ लिखो। तो वे बार-बार वे बस यही दोहरा देते अब मैं अपने पिता श्री के बारे में क्या लिखुं, दोस्त समय मिला तो पूरा का पूरा उपन्यास ही उनके बारे में लिखूंगा। तो मैंने अपना फैसला भाई अफजल को सुना दिया तो फिर ठीक है, मैं बहुत कुछ तो तुम्हारे पिताजी के बारे में जानता ही हूं। बाकी जानकारी तुमसे लेकर मैं उनके बारे में मेरे गांव मेरे लोग में लिखूंगा।

मेरे पिताश्री के वे परम मित्र थे, जब मेरे पिता निझरना खिड़क में मुखिया थे, तब भी स्व. अब्दुल खां जी अपने कोयला व्यवसाय के लिए निझरना आते जाते थे और कभी - कभी खिड़क में ही रात गुजारा करते थे। उनके डिलडाल चालढाल और बोलने के लहजे से मैं बहुत प्रभावित था और स्कूल में उनका बेटा अफजल मेरा साथी मैंने तुरन्त उनके बारे में लिखने का फैसला कर लिया।

अफगानिस्तान के एक छोटे से गांव सवाबशाही, जो उस समय हिन्दुस्तान की सरहद से लगभग 30 मील की दूरी पर था और अब पाकिस्तान की सीमा से 30 मील दूर है। एक मेहनतकश किसान स्व. हजरत खां जी के चार लडकों में सबसे छोटे लडके का नाम स्व. अब्दुल खां जी का जन्म सन् 1886 ईस्वीं में हुआ और वहीं एक कबीले में वहां के रीति रिवाज के अनुसार अपना बचपन गुजार जब जवानी में कदम रखा तो रोजी रोजगार के लिए अपने सबसे बड़े पड़ौसी शहर कराची में आकर काम धंधे की तलाश में लग गए। कई पापड़ बेले, मेहनत मजदूरी की, तभी सन् 1910-11 में ब्रिटिश एयरलाइन्स के बर्माशेल कम्पनी ने कराची से राजसमंद ग्वालियर और मद्रास तक पानी में उतरने वाले हवाई जहाज का संचालन प्रारम्भ किया, तो कराची में बतौर कर्मचारी उनकी नौकरी लग गई और वे कराची में ही अपनी सेवाएं देते रहे। अंग्रेजों की हुकुमत थी, अंग्रेजों के कई बड़े - बड़े अफसर स्व. अब्दुल खां जी के काम से खुश थे। लगभग 15-16 साल तक वे कराची में ही काम करते रहे, तभी सन् 1938 में उनका तबादला कराची से राजसमंद कर दिया गया और वे राजसमंद जहां उस समय पानी में हवाई जहाज उतरा करते थे, अपना कार्य करने लगे। राजसमंद उस समय प्रकृति का एक अनुपम उपहार था। राजसमंद का पूरा का पूरा भरा रहना चारों ओर हरियाली पहाड़ और अरावली के पहाड़ों के जंगल बरबस सबका मन जीत लिया करते थे। उन्हें यह जगह बहुत पसन्द आई, उनकी पत्नी रहमत और बानु व मुन्नी दो लड़कियां और एक शाहबाज खां लड़के के साथ आराम से छीपों के मोहल्ले में घर किराया लेकर रहे थे, तभी इसी राजसमंद में उनके लड़के शाहबाज की डूब कर मौत हो गई। उसके कुछ समय बाद ही उनकी पत्नी रहमत भी दुनिया छोड़कर चले जाना उनके लिये बहुत बड़ा आघात था। जैसे तैसे अपने को संभाल उन्होंने अपनी दोनों पुत्रियों बानू का शहादत खां जी के साहबजादे स्व. मीर खां जी पोस्ट मास्टर साहब व मुन्नी की शादी बड़गांव उदयपुर के स्व. मुराद खां जी के साथ कर दी और वे बिल्कुल अकेले हो गए। तभी सन् 1940 में राजनगर निवासी स्व. जीवन खां ठेकेदार की लड़की कुलसुम के साथ उनका दूसरा विवाह सम्पन्न हुआ और सन् 1942 में उनके एक ओर पुत्र हुआ, जिसका नाम अफजल खां रखा गया, जो मुझे आज ये सब जानकारियां दे रहा है। सन् 1947 में देश आजाद हुआ और उसके

साथ ही देश का बंटवारा भी महत्वकांशी नेताओं के कारण अखण्ड भारत के दो टुकड़े हो गए और शुरू हो गया एक ऐसा ताण्डव, जिसने इंसानियत को झकझोर कर रख दिया। जो जहां था वहीं रह गया, रिश्ते, नाते, प्रेम व्यवहार, सब धरे के धरे रह गए। ऐसे समय में स्व. अब्दुल खां जी ने खुब चाहा की, वह अपने वतन अफगानिस्तान चले जाएं, पर पत्नी व पुत्र के मोह और यहां की संस्कृति का स्वाद उन्होंने इतने वर्षों से चखा उसे छोड़कर उन्होने यहां से जाने का ईरादा छोड़ दिया। अंग्रेजजन जा चुके थे नौकरी भी उनकी जा चुकी थी। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और मेहनत मजदूरी कर रहने लगे। धीरे -धीरे उन्होंने मनिहारी दुकान का काम चालु किया। फिर चश्मे बेचने का भी काम किया। वे इत्र व तेल भी बेचने लगे, पर जल्दी ही उन्हें एक और काम ने आकर्षित किया और वो काम था, लकड़ी के कोयले का वे सुदुर गांवों में कोयले का भट्टा बना कोयला बना कांकरोली, आमेट, नाथद्वारा, चारभुजा आदि स्थानों पर कोयले की बोंरियां बेचने लगे। यह व्यापार चल निकला और वे कोयले वाले पठान के नाम से आस पास के सभी गांव व कस्बों में पहचाने जाने लगे। उन दिनों गैस तो थी नहीं, कोयला ही सभ्रांत परिवारों के लिए अच्छा ईंधन था। अतः उनका व्यापार खूब अच्छा चल निकला। कांकरोली द्वारकाधीश मंदिर में भी भण्डार में इनका ही कोयला जाया करता था। अतः मंदिर मण्डल के अधिकारी व कर्मचारियों से आपके अच्छे संबंध हो गए और मंदिर का प्रसाद भी उन्हें मिलने लगा। बस फिर क्या था, वे यहां की संस्कृति में रम बस गए।

स्व. अब्दुल खां जी के बारे में यहां के बुजुर्ग सभी जानते हैं कि किस सादगी सद्भाव और मिलनसार के साथ वे इतनी दूर अफगानिस्तान से आकर यहां घुल मिल गए। यहां की संस्कृति से जुड गए, जबकि उनकी मातृभाषा पश्तो थी, फिर भी वे पश्तो ट्युन में हिन्दी को बोला करते तो लोगों को बड़ा आनन्द आया करता था। अपने ससुर स्व. जीवन खां जी के रसुख से महाराज श्री ने एक 60 फीट गुणा 40 फीट का प्लॉट चौमुखा महादेव मंदिर के सामने 26 रुपए नजराने के एवज में दिया, जिस पर दो कमरे बना किराए का मकान छोड़ अपने खुद के मकान में रहकर उन्हें बडा सुकून मिला। सन् 1950-51 में मकान बना, उस वक्त वहां कुछ भी नहीं था। हां कलकल करती नहर बहती थी और पडौसी थे, चैमुखा महादेव और उनका मंदिर। सलूस रोड की सड़क भी नहीं थी, जब सलूस बना, तब बनी। कांकरोली से राजनगर सड़क कच्ची थी, चारों ओर खेत ओर सुनसान जंगल था। शाम 6 बजे के बाद मकान का दरवाजा बंद कर दुबक जाते थे, पास की पहाडियों से जरख, लोमड़ियां, नहर का पानी पीने आते जानवरों का शिकार करते थे। धीरे-धीरे मकान बनने लगे और आज क्या है, जो आपके सामने है।

स्व. श्री अब्दुल खां जी लगभग 107 वर्ष तक जिन्दा रहे, पर न तो कभी बीमार पड़े और न ही घर पर कभी आराम किया। उनका बेटा अफजल और मेरी अध्यापक की ट्रेनिंग एसटीसी हमने साथ की और नौकरी भी लग गई। तब अफजल ने अपने पिता से कहा अब आप घर पर आराम कीजिए। मेरी नौकरी लग गई है। मैं घर चला लुंगा। अब्दुल खां जी तुरन्त बोल पड़े, चल हट तेरा काम कर, मुझे अपना काम करने दें। रही तेरे घर चलाने की बात तो क्या मैंने आज तक तुझसे एक पैसा भी लिया है और तू जब पहली तनख्वाह मेरे पास लेकर आया, तब भी मैंने कह दिया था कि बेटा तु तेरी चिन्ता कर मैं जब तक जिन्दा हूं, अपना घर चलाने दें। काम करने दे और हां अगर तूं मुझे काम नहीं करने देगा, तो मैं जिन्दा नहीं रहूंगा। हुआ भी ऐसा ही एक मोटरसाइकिल वाले ने 107 साल की उम्र में उनके टक्कर मारी और उनके कुल्हे की हड्डी टूट गई और वे तीन चार माह में ही सन् 1993 में स्वर्ग सिधार गए। अल्लाह उन्हें जन्नत में आला मुकाम अत्ता फरमाए, उन्हें स्वर्ग में जगह दे।

मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

फतहलाल गुर्जर "अनोखा"
वरिष्ठ साहित्यकार
कांकरोली, राजसमंद

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

RKCL
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

गणतंत्र दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
अपील
खुले में कचरा न फेंके, स्वच्छता में सहयोग करें
Happy Republic Day
वार्डपंच : विजयलक्ष्मी सोनी, कल्पना सनाढ्य, केसरदेवी खटीक, वीरेन्द्रसिंह सिसोदिया, सुनीता खटीक, मीना देवी खटीक, दिनेशचन्द्र सिरवी, अम्बालाल गमेती, नेहा यादव, लक्ष्मण मेघवाल, प्रहलाद कुमार शर्मा, प्रतापसिंह
अजय सिंह चौहान
सरपंच
किशनलाल खटीक
उप सरपंच
ग्राम पंचायत कोठारिया, पंचायत समिति खमनोर, जिला राजसमंद

आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके, स्वच्छता में सहयोग करें
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
Happy Republic Day
26th January
गोमी बाई गुर्जर
सरपंच
ग्राम पंचायत पनोतिया, आमेट, जिला राजसमंद

Happy Republic Day
वंदेमातरम
JK TYRE
TOTAL CONTROL
26
JANUARY
REPUBLIC DAY OF INDIA
जे.के. टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेके ग्राम, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान)

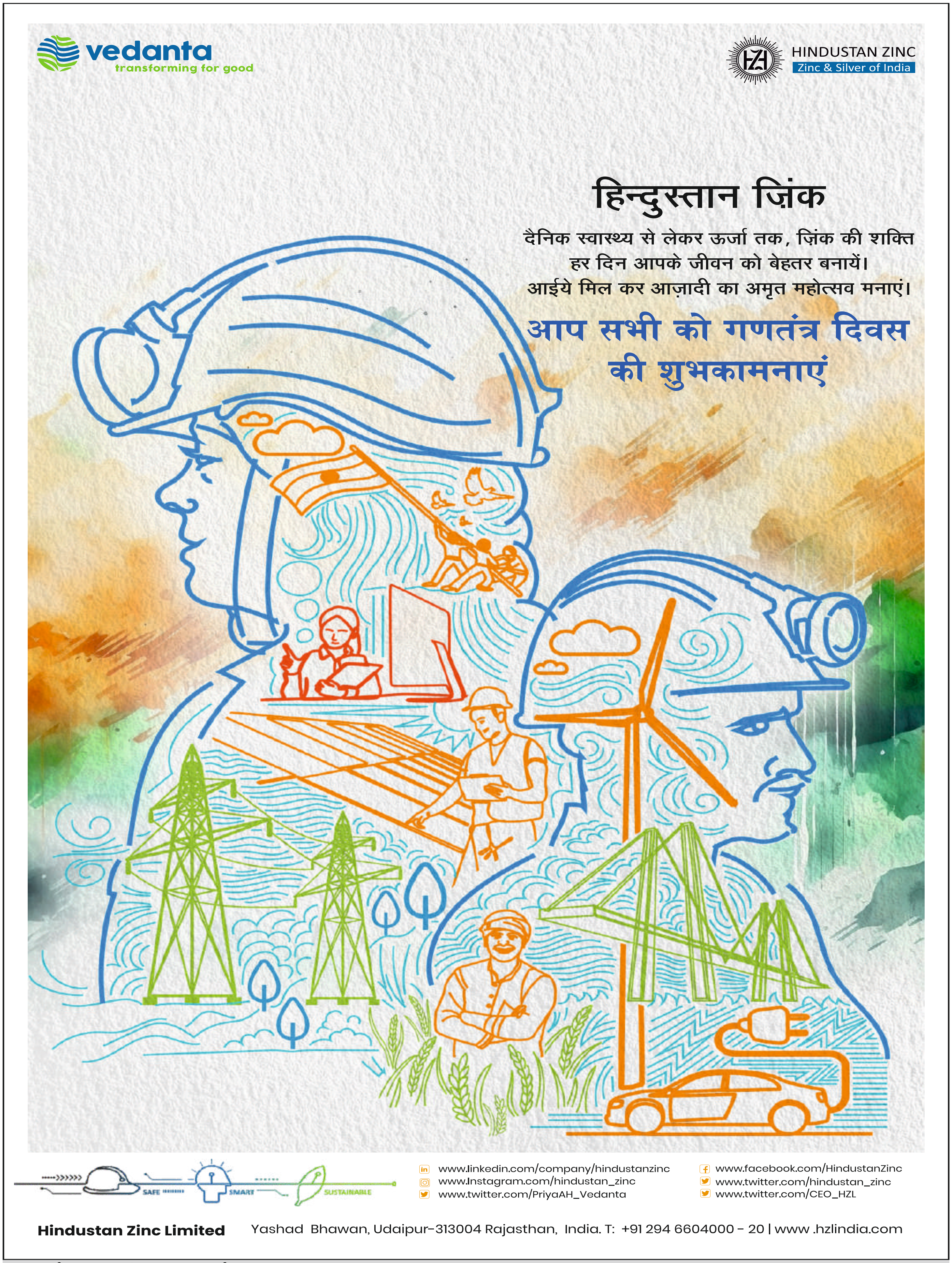
vedanta
transforming for good
HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India
हिन्दुस्तान ज़िंक
दैनिक स्वास्थ्य से लेकर ऊर्जा तक, ज़िंक की शक्ति
हर दिन आपके जीवन को बेहतर बनायें।
आईये मिल कर आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएं।
आप सभी को गणतंत्र दिवस
की शुभकामनाएं
SAFE
SMART
SUSTAINABLE
www.linkedin.com/company/hindustanzinc
www.Instagram.com/hindustan_zinc
www.twitter.com/PriyaAH_Vedanta
www.facebook.com/HindustanZinc
www.twitter.com/hindustan_zinc
www.twitter.com/CEO_HZL
Hindustan Zinc Limited
Yashad Bhawan, Udaipur-313004 Rajasthan, India. T: +91 294 6604000 - 20 | www .hzlindia.com

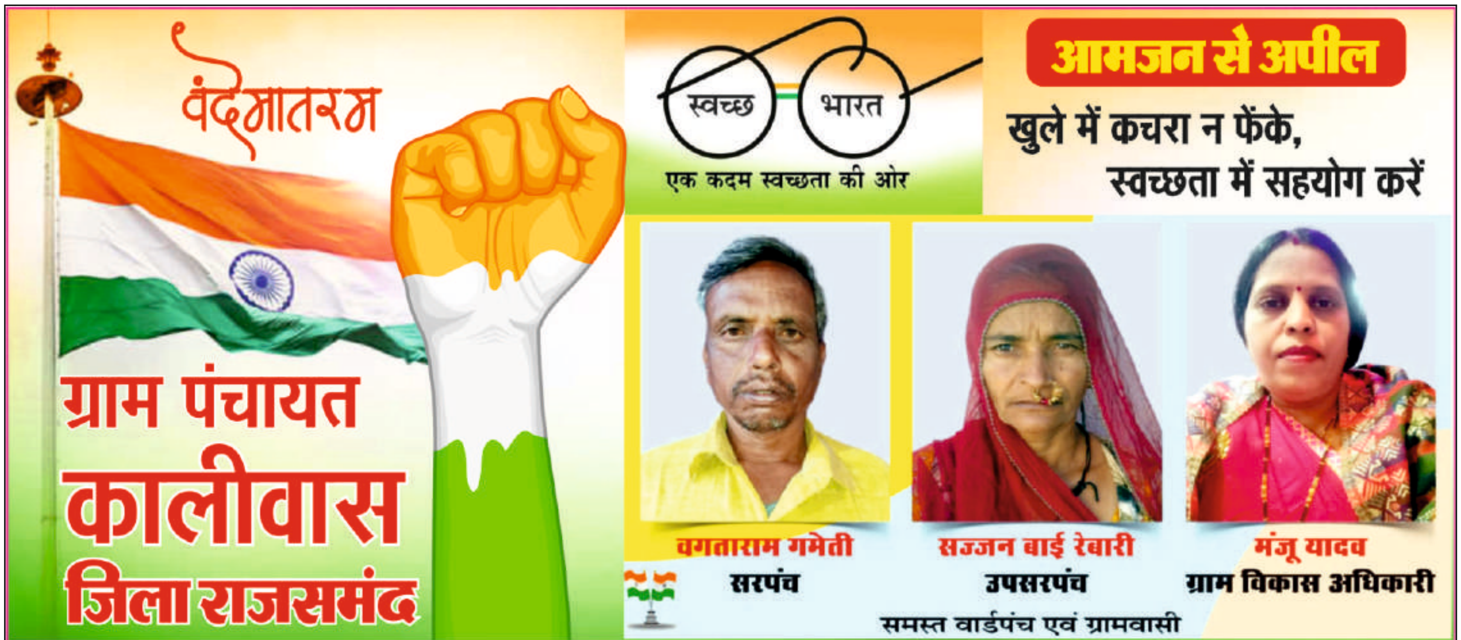
वंदेमातरम
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
ग्राम पंचायत
कालीवास
जिला राजसमंद
वगताराम गमेती
सरपंच
सज्जन बाई रेबारी
उपसरपंच
मंजू यादव
ग्राम विकास अधिकारी
समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी

आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
Happy Republic Day
26th January
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
मांगी देवी गुर्जर
सरपंच
ग्राम पंचायत साकरोदा, जिला राजसमंद

वंदेमातरम
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
ग्राम पंचायत
भैंसाकमेड़
पं. स. खमनोर
हेमलता मेघवाल
सरपंच
रीना कुंवर
उपसरपंच
लटूरराम मेघवाल
समाज सेवी

वंदेमातरम
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
INDIA REPUBLIC DAY
ग्राम पंचायत
घोड़च
जिला राजसमंद
देवीलाल खटीक
सरपंच
भगवतसिंह देवड़ा
उप सरपंच
रघुवीरसिंह चुंडावत
ग्राम विकास अधिकारी

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके
स्वच्छता में सहयोग दें।
Happy Independence Day
रामेश्वरलाल खटीक
उप प्रधान देलवाड़ा
दोली बाई गमेती
सरपंच बिलोता
शांता डांगी
उप सरपंच बिलोता
बाबुड़ी बाई गमेती
पंचायत समिति सदस्य देलवाड़ा
ग्राम पंचायत
बिलोता
जिला राजसमंद

गणतंत्र दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
वीणा चौहान,
ग्राम विकास अधिकारी
वार्डपंचगण
भीमराज गमेती, जशोदा गमेती, जोधसिंह,
रमेश मेघवाल, शिल्पी शक्तावत, गोविन्द कुंवर राठौड़,
सुरेश डांगी, राजेंद्रसिंह झाला, प्रेमलता वैष्णव, नरेश वैष्णव
वरजू देवी डांगी
सरपंच
सीता डांगी
उप सरपंच
ग्राम पंचायत शिशवी, पंचायत समिति देलवाड़ा, जिला राजसमंद

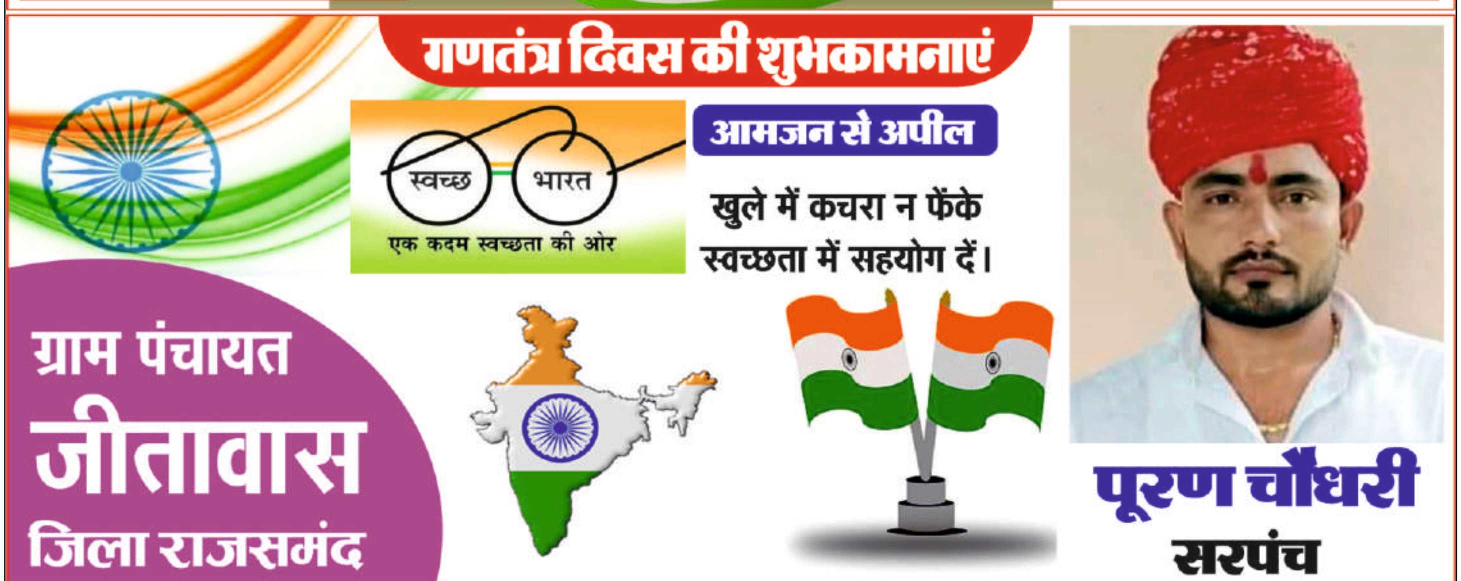

जयवर्द्धन

जयवर्द्धन NEWS

C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल,
सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews · jaivardhannews.com · f liverajsamand · f जयवर्द्धन